



ज्ञानाञ्जलि

वर्ष - 2025-26



साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

Website : www.srmmbareilly.ac.in



राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL
An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

*The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya
Shyamganj, Bareilly,
affiliated to Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Uttar Pradesh as
Accredited
with CGPA of 2.54 on four point scale
at B grade
valid up to February 20, 2019*

Date : February 21, 2014



*Swarmitai
Director*



EC/66/RAR/062

साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय
बरेली

वर्ष - 2025-26

ज्ञानाञ्जलि



संरक्षिका
प्रो. अनुपमा मेहरोत्रा
प्राचार्या

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक

डॉ. प्रतिभा पाण्डेय

सम्पादक मण्डल

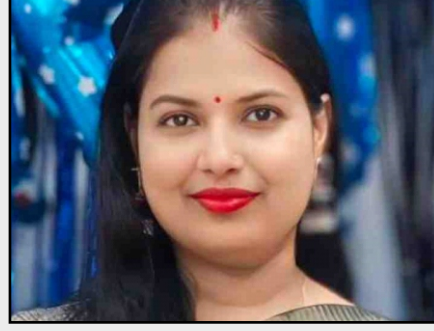
हिन्दी प्रकल्प	-	डॉ. अनीता
अंग्रेजी प्रकल्प	-	डॉ. बीना यादव
	-	श्रीमती अफरोज जहाँ
संस्कृत प्रकल्प	-	श्रीमती शिल्पी शर्मा
आवरण मुख्य पृष्ठ	-	डॉ. रूचि अग्रवाल

Website : www.srmmbareilly.ac.in

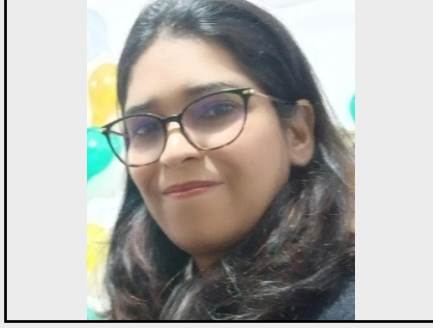
सम्पादक मण्डल



डॉ. प्रतिभा पांडेय
हिन्दी विभाग



डॉ. अनीता
हिन्दी विभाग



डॉ. बीना यादव
अंग्रेजी विभाग



डॉ. रूचि अग्रवाल
अंग्रेजी विभाग



श्रीमती अफरोज जहाँ
अंग्रेजी विभाग

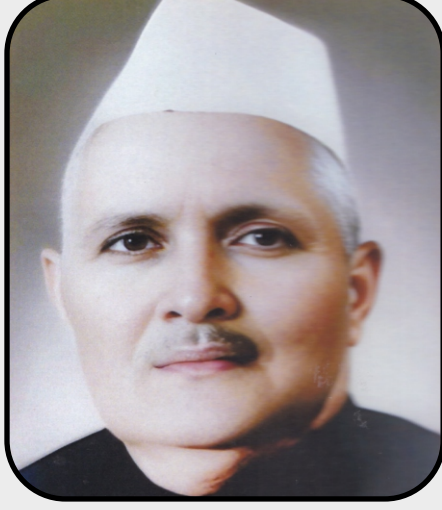


श्रीमती शिल्पी शर्मा
संस्कृत विभाग



“ॐ शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनी।
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारामहाम्॥
हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥”

महाविद्यालय के जनक



श्री साहू रामस्वरूप जी : एक आर्ष व्यक्तित्व

पूज्य साहू रामस्वरूप जी यद्यपि अपने दैहिक शरीर से इस संसार में नहीं हैं, किन्तु
“दीप होते हैं, जो कि बुझते हिलोरों से।
आप लपट हो, फैलोगे झकोरों से।”

इस कथन को चरितार्थ करते हुए, अपने यशः काय से आज भी इस संसार में देदीप्यमान हैं। समाज के प्रति शुभ संकल्पों से अनुप्राणित उनकी संचेतना के प्रवाह ने, नारी को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर, उसमें सर्जनात्मक व्यक्तित्व का विकास किया। उनके आंतरिक गुण एवं अथक परिश्रम का जीवंत रूप 'साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय' है, जो अपने जन्म लेकर निरन्तर नारी को शिक्षा से सजाने एवं जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करता आ रहा है।

सन् १९५५ में जूनियर हाईस्कूल के रूप में इस विद्यालय का अंकुर प्रस्फुटित हुआ। विद्या का यही प्रस्फुटित अंकुर अपने संस्थापना वर्ष १९६५ से आज उत्तरोत्तर विकास करता हुआ, स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में पल्लवित और पुष्पित हैं। इस महाविद्यालय की नींव जिस भूमि पर रखी है, वहाँ उनके ज्येष्ठ पुत्र के नाम से संचालित श्री कृष्ण तेल उद्योग संस्थान था, जिसे समाप्त कर उन्होंने इस शिक्षण संस्था की नींव रखी। यह उनके अप्रतिम त्याग एवं श्रेष्ठ सामाजिकता का ही अद्भुत उदाहरण है।

उन्हीं के पावन संस्कारों से सम्प्रेरित उनके कर्मठ आत्मज स्व. कुँवर औतार जी के पुत्र श्री मनोज गोयल जी इस महाविद्यालय को मूल्य युक्त शैक्षिक ऊँचाई तक ले जाने में सतत प्रयासरत हैं।

लोकमांगलिक दृष्टि से उन्होंने साहू रामस्वरूप धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना की, जिसके द्वारा वर्तमान में 'श्रीमती चन्द्रावती सूरज औतार पब्लिक स्कूल', 'साहू गोपीनाथ इण्टर कॉलेज एवं साहू रामस्वरूप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बरेली आदि शैक्षिक संस्थाएँ स्थापित हैं, जो बरेली का गौरव हैं।

भारतीय संस्कृति के 'तेन त्येतेन भुञ्जीथाः' के भाव से अनुप्राणित, कथनी करनी के एकरूप्य, श्रद्धेय साहू रामस्वरूप जी आज भी महाविद्यालय के कण-कण में अपने जीवतंतता का उद्घोष कर रहे हैं। महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्य उन्हें सादर नमन करते हैं।

महाविद्यालय परिवार

संस्थापना वर्ष 1965 से 1968 तक
सचिव पद पर कार्यरत कर्मठ योगी



स्व. कुँवर सूरज अवतार जी

महाविद्यालय के प्रेरणास्रोत



श्रद्धेय चिरस्मरणीय सम्माननीय सचिव कुंवर ओम औतार जी साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली से जनवरी १९८७ से सचिव पद पर मृत्युपर्यन्त आसीन रहे। अपने इस कार्यकाल में आपने अथक परिश्रम, त्याग, समर्पण, लगन, पूर्ण निष्ठा एवं दृढ़ संकल्प शक्ति से महाविद्यालय को प्रगति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने में महती भूमिका का निर्वहन किया।

वे छात्राओं के बहुमुखी विकास के लिए सदैव चिन्तित रहे, जिसके परिणाम स्वरूप महाविद्यालय के पाठ्य सहगामी एवं पाठ्येतर क्रियाकलापों जैसे - योग, स्वच्छ सुन्दर पर्यावरण एवं क्रीड़ा पर उनका विशेष आग्रह रहा।

इस महाविद्यालय की नींव, जो उनके पिता जी के द्वारा रखी गयी थी, उसे उन्होंने शिखर की ऊँचाइयों तक पहुँचाकर रूहेलखण्ड क्षेत्र में महनीय स्थान दिया। उत्तर प्रदेश में एक मात्र महाविद्यालय के रूप में सर्वप्रथम यू. जी. सी. के नैक का निरीक्षण करवाने का श्रेय हमारे सचिव महोदय को ही जाता है। इस तरह महाविद्यालय की बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर प्रयासरत उनके दूरदर्शी नेतृत्व एवं निर्देशन में यह महाविद्यालय इस क्षेत्र के सर्वोत्तम महिला शिक्षा केन्द्र के रूप में स्थापित हो पाया।

अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में भी दृढ़ कर्मयोगी की भाँति वे निरन्तर महाविद्यालय की प्रगति एवं विकास हेतु चिन्तित व प्रयत्नशील रहे।

महाविद्यालय कुलगीत

साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय
जय हो, जय हो।

धन्य-धन्य इसके निर्माता, अपने पूज्य पिता और माता,
निज स्वार्थों से ऊपर उठकर, बने पुण्य प्रारब्ध प्रातः
हर नारी इस महा-देश की, विकसित बुद्धि विराट हृदय हो।

साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय
जय हो, जय हो।

यही कामना रहे हमारी, पढ़े-लिखें कन्यार्यें सारी,
ज्ञानालोकित करें धरा को, महका दे घर की फुलवारी
विश्वपटल पर दिशा-दिशा में शिक्षित नारी शक्ति उदय हो।

साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय
जय हो, जय हो।

स्त्रीमूला नव संस्कृति हो, दूर दृष्टि से कर्मठ गति हो,
समय शोध हो मूल्य-बोध हो, मृदु मानवता की झंकृति हो,
बुद्धि-विवेक, ज्ञान-स्तम्भ पर, लहर-लहर में अन्तरलय हो।

साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय
जय हो, जय हो।



महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय
बरेली-243006
MAHATMA JYOTIBA PHULE ROHILKHAND UNIVERSITY
Bareilly - 243006

प्रो. के. पी. सिंह
Prof.K.P. Singh
कुलपति
Vice- Chancellor
MJPRU, BAREILLY

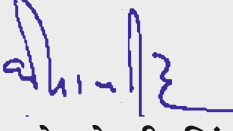


संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, श्यामगंज, बरेली सत्र २०२५-२०२६ की अपनी पत्रिका 'ज्ञानाञ्जलि' का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से महाविद्यालय की छात्राओं को सार्थक एवं प्रेरणादायी पाठ्य - सामग्री उपलब्ध होगी, इसके साथ-साथ छात्राओं को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को लेख के माध्यम से अभिव्यक्त करने का अवसर भी मिल सकेगा।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से छात्राओं एवं शिक्षकों को ज्ञानवर्द्धक, रोचक साहित्य पढ़ने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

शुभकामनाओं सहित!


प्रो. के. पी. सिंह

प्रो. (डॉ.) सुधीर कुमार
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
बरेली एवं मुरादाबाद मण्डल



संदेश

आदरणीय महोदया,

परम हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय सत्र २०२५-२६ में पत्रिका 'ज्ञानाञ्जलि' प्रकाशित करने जा रहा है। महाविद्यालय पत्रिका युवा पीढ़ी की सृजनात्मक क्षमता के पल्लवन एवं प्रस्फुटन की जीवंत अभिव्यक्ति होती है। मेरा विश्वास है कि पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को उचित दिशा एवं प्रभावशाली मंच प्राप्त होगा। पत्रिका के कलेवर में विद्वान शिक्षिकाओं के ज्ञानवर्धक लेख छात्राओं के लिए मार्गनिर्देशक का कार्य करेंगे।

मैं पत्रिका के प्रकाशन हेतु महाविद्यालय की प्राचार्या, प्राध्यापिकाओं एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देते हुए छात्राओं के उन्नत भविष्य हेतु अपनी शुभकानाएं प्रेषित करता हूँ।

सादर!

भवनिष्ठ

प्रो. (डॉ.) सुधीर कुमार

श्री विजय कुमार गुप्ता
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति



संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, श्यामगंज, बरेली सत्र २०२५-२०२६ की अपनी पत्रिका 'ज्ञानाञ्जलि' का प्रकाशन करने जा रहा है। इस अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

शिक्षा के क्षेत्र में असीम योगदान के लिए मैं प्रधानाचार्य, प्रबंधक, अध्यापिकाओं और सभी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

मैं ईश्वर से कामना करता हूँ कि यह विद्यालय अपने प्रयोजन में निरंतर सफलता की ओर अग्रसर रहे।

शुभकामनाओं सहित!

विजय कुमार गुप्ता
अध्यक्ष

Message

(Manoj Goel)
Secretary



Warm greetings to all readers of our College Magazine.

Education is the cornerstone of quality and progress. When women are empowered through education, families and society grow stronger. Our institution remains steadfast in its commitment to providing a safe, inclusive, and supportive environment where every student can discover her potential and achieve her aspirations.

Sahu Ramswaroop Mahila Mahavidyalaya continues to excel in academics, co-curricular activities, community engagement, and skill development initiatives. The accomplishments of our students reflect the unwavering dedication of our faculty and the perseverance of our learners.

We strongly believe in holistic development that nurtures character, leadership, and social responsibility. Through modern, learner-centred teaching methodologies and the effective integration of digital tools, we strive to provide meaningful and engaging educational experiences.

I encourage all students to remain focused, confident, and committed to their goals. My sincere appreciation goes to the editorial team and staff for bringing out this inspiring edition.
Best wishes to all.

A handwritten signature in blue ink, appearing to read 'Manoj Goel'.

(Manoj Goel)
Secretary

Principal's Message

Prof. (Dr.) Anupma Mehrotra
(Principal)



Dear Students, Staff, and Readers,

It is with immense pride and joy that I extend my warm greetings to all the readers of this edition of our institution's magazine. This publication serves as a reflection of the creativity, hard work and dedication of our vibrant college community.


Education is not just about acquiring knowledge but also about nurturing the skills, values, and confidence to face life's challenges. At our institution, we strive to create a holistic environment where student can thrive academically, artistically and socially, preparing them for a promising future.

This magazine is a platform where our students and faculty members showcase their talents, ideas and achievements. Each article, poem, and piece of art within these pages reflects the unique perspectives and aspiration of our community, your creativity and contributing to such enriching endeavors.

I take this opportunity to congratulate the editorial team and all the contributors who have worked tirelessly to bring this edition to life. Your efforts exemplify the spirit of teamwork and excellence that we hold.

Wishing you all success in your journey of learning and growth. May this magazine inspire you and remind us of the collective potential we hold as a community.

Warm regards,


(Dr. Anupma Mehrotra)
Principal

सम्पादकीय कलम से...



भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य के तीन हेतु बताए गए हैं - प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास। प्रतिभा दो प्रकार की होती है। सहजा अर्थात् जन्मजात, उत्पाद्या अर्थात् शास्त्रज्ञान और अभ्यास आदि के बल पर विकसित। व्युत्पत्ति का अर्थ है- छन्द, व्याकरण, कला, लोकस्थिति तथा पदार्थों के ज्ञान से युक्तायुक्त विवेक। अभ्यास 'अभ्यासों हि कर्मसु कौशल्यावहृति' के आधार पर कर्म की कुशलता का नाम है। महाविद्यालयीय पत्रिका 'ज्ञानाञ्जलि' इन्हीं तीनों काव्यहेतुओं के आधार पर छात्रों की क्षमताओं को विकसित करने का प्रयास है।

तकनीकी, प्रौद्योगिकी के इस चरमोत्कर्ष युग में प्रत्येक क्षेत्र में अनेक युगान्तकारी परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा का क्षेत्र भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है। दृश्य-श्रव्य संचार माध्यमों से ई-बुक, ई-मैगजीन, ई-जनरल आदि सर्वसुलभ है, किन्तु मेरा अभिमत है कि कोई संचार क्रांति प्रकाशित साहित्य का विकल्प नहीं बन सकती है। 'ज्ञानाञ्जलि' पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य भी महाविद्यालयीय प्रतिभाओं के चिंतन-मनन रूपी पुष्पों को एक सशक्त पुष्प-गुच्छ के रूप में प्रस्तुत करना है। छात्रों की इस नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा को मुखरित करने हेतु महाविद्यालय सदैव कटिबद्ध रहता है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि 'ज्ञानाञ्जलि' पत्रिका का यह अंक अपने कलेवर में समन्वित किये हुए इन्द्रधनुषी विचारों के माध्यम से पाठकों के अन्तर्मन को स्पर्श करने में सफल सिद्ध होगा। इसके लिए मैं प्रबन्ध समिति के सम्माननीय सचिव श्री मनोज गोयल, महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. अनुपमा मेहरोत्रा तथा महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्य एवं पत्रिका के सम्पादक मण्डल के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

P. Pandey

डॉ. प्रतिभा पाण्डेय
हिन्दी विभाग

प्रबन्धक मण्डल



श्री विजय कुमार गुप्ता
अध्यक्ष



डॉ. शशि बाला राठी
उपाध्यक्ष



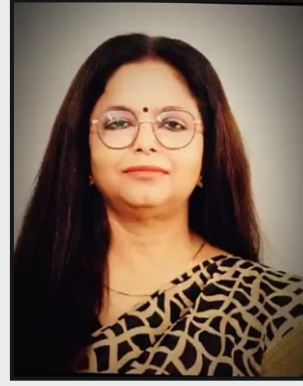
श्री मनोज गोयल
सचिव



श्री मनोज मंगल
सह-सचिव



डॉ. के. सी. पाठक
सदस्य



प्रो. संतोष अरोड़ा
सदस्य



प्रो. आलोक श्रीवास्तव
सदस्य



डॉ. आनन्द प्रकाश गोयल
सदस्य



श्री मोहित मेहरा
सदस्य



श्रीमती संजम गोयल
सदस्या



प्रो. अनुपमा मेहरोत्रा
प्राचार्या एवं पदेन सदस्या

शिक्षक वर्ग



शिक्षणेत्तर वर्ग



साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

परिचय : साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली मण्डल की लब्ध प्रतिष्ठित महिला शिक्षण संस्था है। इसकी स्थापना स्वर्गीय साहू रामस्वरूप जी द्वारा अपने दिवंगत पिता स्वर्गीय साहू गोपीनाथ जी की पुण्य स्मृति में सन् १९५५ में की गयी। उत्तरोत्तर विकास पथ पर अग्रसर यह संस्था सन् १९६५ में स्नातक तथा १९८०-८१ में स्नातकोत्तर स्तर तक पहुँची। कालान्तर में साहू रामस्वरूप ट्रस्ट के निर्णयानुसार उच्चतर शिक्षण कक्षाओं हेतु इस संस्था को “ साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय” नाम से अभिहित किया गया। वर्तमान में इसका अनुमोदन ‘कुलाधिपति’ उत्तर प्रदेश से भी प्राप्त है। यहाँ वर्तमान में लगभग २३०० छात्राएँ अध्ययनरत हैं। महाविद्यालय का इतिहास संघर्ष, साधना एवं अपराजेयता का इतिहास है।

महाविद्यालय का सफल संचालन ‘साहू रामस्वरूप धर्मार्थ ट्रस्ट अपनी नियमावली के प्रावधान के अनुरूप सोलह सदस्यीय प्रबन्ध समिति के माध्यम से करता है। प्रबन्ध समिति में नगर के प्रतिष्ठित शिक्षाविद्, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, उद्योगपति, व्यापारी व पदेन सदस्य, प्राचार्या के अतिरिक्त वरिष्ठताचक्रानुक्रम में शिक्षिकाओं व शिक्षणेतर कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व रहता है।

महाविद्यालय ‘विश्वविद्यालय अनुदान आयोग’, नई दिल्ली के अधिनियम सैक्शन २(एफ) एवं १२(बी) में स्वीकृत है तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली से विभिन्न विकास अनुदान प्राप्त कर रहा है। सत्र २०१४ में ‘राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्’, बंगलौर (NAAC) द्वारा महाविद्यालय का स्वेच्छा से द्वितीय बार मूल्यांकन करवाया गया, जिसमें हमारे महाविद्यालय ने 'B' ग्रेड प्राप्त किया।

निरन्तर गुणवत्ता विकास हेतु महाविद्यालय के सभी विभागों को दृश्य-श्रव्य संसाधनों द्वारा उच्चिकृत किया जा रहा है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत ‘वर्चुअल क्लास रूम’ की स्थापना की जा चुकी है। नैक (NAAC) के दिशा निर्देशन के अनुपालन में शैक्षिक गुणवत्ता बनाए रखने हेतु ‘आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ’ (IQAC) का गठन किया गया है।

उपलब्धियाँ श्लाघनीय परीक्षा परिणाम किसी भी महाविद्यालय का दर्पण होता है। इस दृष्टि से महाविद्यालय की उपलब्धियाँ श्लाघनीय हैं। स्नातक स्तर का परीक्षाफल ९५ से ९८ प्रतिशत तथा परास्नातक स्तर का ९८ से १०० प्रतिशत तक रहता है। परीक्षाफल मात्रात्मक होने के साथ-साथ गुणात्मक भी रहता है। महाविद्यालय की छात्राओं ने विश्वविद्यालय स्तर पर कला संकाय में स्नातक एवं परस्नातक स्तर पर सर्वोच्च अंक प्राप्त करके महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है।

पाठन-पाठन मूल्यांकन : महाविद्यालय महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त है। अतः यहाँ विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रमों का अध्यापन किया जाता है। विश्वविद्यालयीय नियमों के अन्तर्गत मूल्यांकन हेतु वार्षिक परीक्षा पद्धति एवं नई शिक्षा नीति के अनुरूप सेमेस्टर प्रणाली लागू है तथापि छात्राओं का सतत मूल्यांकन - सेमिनार, कार्यशाला, कक्षा-परीक्षा, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा प्रोजेक्ट आदि आयोजनों द्वारा किया जाता है।

स्नातक स्तर पर शारीरिक शिक्षा एवं पर्यावरण के साथ चौदह विषयों तथा परास्नातक स्तर पर बारह विषयों के मुख्यधारा पाठ्यक्रमों के साथ-साथ विभिन्न व्यावसायिक डिप्लोमा प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, जिससे छात्राएँ पारम्परिक शिक्षा के साथ-साथ स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षित होकर आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बन सकें।

शोध परियोजना : महाविद्यालय में विगत कई वर्षों से निरन्तर उच्चस्तरीय शोधकार्य हो रहे हैं, जो मुख्यतः परास्नातक विषयों की शोध उपाधि (Ph.D) से सम्बन्धित हैं। संगीत विषय में वर्तमान तक लगभग ९० तथा चित्रकला विषय में ६६ शोधार्थी शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, गृहविज्ञान, इतिहास तथा अंग्रेजी में भी शोध कार्य हो रहे हैं। पारम्परिक शोध के साथ-साथ महाविद्यालय की शिक्षिकाओं के पाँच रिसर्च प्रोजेक्ट भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत हो चुके हैं, जिसमें चित्रकला विभाग में एक मेजर व दो माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट, संगीत विभाग में एक मेजर

रिसर्च प्रोजेक्ट और शिक्षाशास्त्र में एक माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट पूर्ण हो चुके हैं। शिक्षिकाएँ एवं शोध छात्राएँ शोधपत्र प्रकाशन तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में उत्साहपूर्वक सहभागिता कर रही हैं, जिसके सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर हैं। स्तरीय शोधकार्यों के संचालन में महाविद्यालय के समृद्ध पुस्तकालय का अहम योगदान है, जिसे प्रतिवर्ष महाविद्यालय बजट तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से निरन्तर उच्चकृत किया जाता है। विभिन्न विषयों से संबंधित साहित्य तथा शोध-पत्र, पत्रिकाएँ (राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय) मंगवाई जा रही हैं।

संरचना अधिगम संसाधन : महाविद्यालय नगर निगम की सीमा में बरेली नगर के श्यामगंज क्षेत्र में स्थित है, जिसमें शिक्षण एवं शिक्षणोत्तर गतिविधियों के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं।

पुस्तकालय : महाविद्यालय में एक समृद्ध पुस्तकालय है, जिसमें छात्राओं के अध्ययन हेतु लगभग 40000 पुस्तकें संग्रहीत हैं, जिनके अनुशीलन से छात्राओं एवं शिक्षिकाओं का बौद्धिक विकास होता है। राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों के ज्ञानार्जन हेतु सामाजिक तथा साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं एवं शोध जर्नल्स उपलब्ध हैं। पुस्तकालय का आटोमेशन कार्य पगति पर है। छात्राओं के उच्च ज्ञानवर्धन हेतु पुस्तकालय में ऑनलाइन (N-List) सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क की सुविधा भी उपलब्ध है। साथ ही On Line Magzter के माध्यम से ई-समाचार पत्र और पत्रिका के अध्ययन की भी सुविधा उपलब्ध है, इसके माध्यम से छात्राएँ लगभग 400 ई-समाचार पत्र और मैगजीन का अध्ययन कर सकती हैं।

पुस्तकालय में निर्धन छात्रा कोष की सुविधा भी उपलब्ध है, जिसके अन्तर्गत आर्थिक रूप से दुर्बल छात्राओं को पूरे सत्र के लिए निःशुल्क पुस्तकें उपलब्ध करायी जाती हैं।

वर्चुअल अध्ययन कक्ष : महाविद्यालय में 80 से 100 विद्यार्थियों की क्षमता वाले वर्चुअल अध्यापन कक्ष 5 है, जिसमें 75 इंच का प्रत्येक वर्चुअल कक्ष में स्मार्ट बोर्ड है। जिसका उद्देश्य ऑनलाइन पाठ्य-सामग्री के माध्यम से छात्राओं की सीखने की क्षमता में वृद्धि करना है।

डिजिटल बूस्टर प्रयोगशाला : 2019 से महाविद्यालय में 24 कम्प्यूटरों वाले एक डिजिटल बूस्टर प्रयोगशाला की स्थापना की गयी है। यह प्रयोगशाला महाविद्यालय की छात्राओं के साथ ही परिसर के बाहर के विद्यार्थियों के लिए भी उपलब्ध है।

कम्प्यूटर प्रयोगशाला : महाविद्यालय में एक कम्प्यूटर प्रयोगशाला है, जिसमें कुल 11 कम्प्यूटर हैं, जो सभी छात्राओं के लिए उपलब्ध है।

आहार एवं पोषण प्रयोगशाला : महाविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग में आहार एवं पोषण प्रयोगशाला हैं, जिसमें पाक-विधियों से सम्बन्धित अत्याधुनिक उपकरण जैसे - एअर फ्रायर, माइक्रोवेव, ओ.टी.जी. टोस्टर इत्यादि हैं। इसमें छात्राओं को विभिन्न आयोजनों के अनुसार आहार बनाने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त रूग्णावस्था, धात्रीवस्था, आयु के अनुसार आहार आदि बनाने का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ स्वाद के साथ स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा जाता है। इस हेतु छात्राओं को आहार आयोजन करने के गुण भी सिखाए जाते हैं।

वस्त्र विज्ञान एवं परिधान प्रयोगशाला : गृह विज्ञान विभाग में वस्त्र-विज्ञान एवं परिधान प्रयोगशाला भी है। यहाँ छात्राओं को वस्त्रों की सिलाई हेतु आवश्यक विभिन्न कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रयोगशाला में सिलाई हेतु अत्याधुनिक मशीनें भी उपलब्ध हैं। इसके साथ ही छात्राओं को रंगाई व छपाई की आधुनिक विधियाँ भी सिखायी जाती हैं।

कॉन्फ्रेंस कक्ष : एल.सी.डी. प्रोजेक्टर व स्मार्ट बोर्ड से सुसज्जित 60 सीटों की क्षमता वाला एक कॉन्फ्रेंस कक्ष है, जहाँ समय-समय पर विभिन्न विभागों के द्वारा संगोष्ठी कार्यशाला, सम्मेलन एवं आवश्यक बैठकों का आयोजन होता रहता है।

कला दीर्घा : चित्रकला विभाग में छात्राओं हेतु आर्ट गैलरी का निर्माण कराया गया है जिसमें विभाग की छात्राओं एवं शिक्षिकाओं द्वारा सामूहिक / एकल चित्रकला प्रदर्शनियों का आयोजन होता रहता है।

कोरियोग्राफी एवं स्टूडियो : विश्वविद्यालय अनुदान नई दिल्ली के नवाचार योजनान्तर्गत महाविद्यालय के संगीत विभाग में एक वैकल्पिक विषय के रूप में 2015 से कोरियोग्राफी के अध्ययन-अध्यापन का प्रारम्भ हुआ। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में हमारा महाविद्यालय इस गौरव को प्राप्त करने वाला प्रथम महाविद्यालय था। साथ ही छात्राओं हेतु एक कोरियोग्राफी

स्टूडियो की भी स्थापना की गयी है, जहाँ छात्राएँ पूरा मनोयोग से नृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं। यहाँ छात्राओं के लिए संगीत व नृत्य से सम्बन्धित अत्याधुनिक उच्चस्तरीय उपकरण उपलब्ध हैं।

औम सभागार : यह महाविद्यालय का हृदय स्थल है। जहाँ उच्चस्तरीय शैक्षिक संगोष्ठियों व कार्यशालाओं के साथ-साथ प्रतिवर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम व परिधानोत्सव (फैशन शो) का आयोजन होता है।

व्यायामशाला : महाविद्यालय परिसर में एक सुविशाल व्यायामशाला की सुविधा भी है। अत्याधुनिक जिम व इन्डोर गेम्स की सुविधा छात्राओं एवं महाविद्यालय के शिक्षण/शिक्षणोत्तर कर्मचारियों के लिए उपलब्ध है।

महिला छात्रावास : नगर के बाहर से आने वाली छात्राओं को सुरक्षित आवासीय सुविधा उपलब्ध करवाने हेतु महाविद्यालय परिसर में ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान से एक छात्रावास का निर्माण कराया गया है। छात्रावास में 24 घण्टे बिजली व पानी आदि की समुचित व्यवस्था है, साथ ही भोजनादि की भी समुचित व्यवस्था उपलब्ध रहती है।

योग कक्ष : महाविद्यालय परिसर में एक योग कक्ष निर्मित है जिसमें नियमित योग क्रियाएँ करवाई जाती हैं। कक्ष में स्मार्ट बोर्ड एवं लगभग 50 छात्राओं के बैठने की व्यवस्था है।

जलपान गृह : महाविद्यालय परिसर में छात्राओं हेतु सुविधा सम्पन्न स्वच्छ आधुनिक कैफेटेरिया भी उपलब्ध है।

छात्रा सहयोग अभिकरण : अनुशासन समिति / शिकायत निवारण प्रकोष्ठ : महाविद्यालय में छात्राओं में अनुशासन बनाये रखने हेतु प्राक्टोरियल बोर्ड की व्यवस्था है, जिसमें शिक्षिकाओं एवं छात्राओं की सहभागिता रहती है। जिसमें छात्राओं की महाविद्यालयीय समस्याओं के साथ-साथ उनकी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान देने का प्रयास भी किया जाता है।

व्यक्तित्व विकास : छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु पारम्परिक शिक्षा के साथ-साथ पाठ्येतर क्रियाकलापों का भी संचालन विभागीय-महाविद्यालयीय व विश्वविद्यालयीय स्तर पर किया जाता है। सेमिनार, कार्यशाला, भाषण, निबन्ध, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, परिचर्चा, अतिथि व्याख्यान आदि कार्यक्रमों का आयोजन प्रतिवर्ष कराया जाता है। महाविद्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक व अन्य पाठ्येतर क्रियाकलापों में देश की अनेक नामचीन हस्तियाँ पधारकर हमें गौरवान्वित करती रहती हैं। छात्राओं को युवा समारोहों, राज्य व राष्ट्र स्तरीय खेलकूद स्पर्धाओं व अन्य अनेक प्रतियोगिताओं में सहभागिता करायी जाती है। समय की आवश्यकता को देखते हुए छात्राओं को कम्प्यूटर के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की तकनीकों की जानकारियाँ व प्रशिक्षण भी सशक्त क्लब, दूरदर्शी क्लब, आइडिया क्लब, नवप्रवर्तक क्लब में छात्राओं को विभाजित करके पारस्परिक पाठ्य सहगामी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

प्रसार कार्यक्रम : महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की दो तथा राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) व रोवर रेंजर्स की एक-एक इकाई संचालित की जा रही हैं। इनके माध्यम से महाविद्यालय की छात्राएँ सामाजिक सरोकरों से जुड़ी हैं। उनके द्वारा प्रतिवर्ष साक्षरता अभियान, स्वच्छता अभियान, रक्तदान, वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण, महिला व बालिका संरक्षण जैसे सामाजिक कार्य उत्साहपूर्वक सम्पन्न किये जाते हैं। इस प्रकार के कार्य छात्राओं को न केवल राष्ट्र वरन् सम्पूर्ण विश्व के प्रति उत्तरदायित्व निर्वाह करने हेतु प्रेरित करते हैं। विषयों के व्यावहारिक ज्ञान प्राप्ति हेतु विभिन्न प्रशिक्षण शिविर एवं शैक्षणिक भ्रमण भी आयोजित किये जाते हैं।

महाविद्यालय क्लब : महाविद्यालय में सशक्त क्लब, दूरदर्शी क्लब, आइडिया क्लब, नवप्रवर्तक क्लब में महाविद्यालयीय छात्राओं को विभाजित करके पारस्परिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

खेल एवं शारीरिक शिक्षा : युवाओं को सकारात्मक रूप से बढ़ावा देने एवं युवाओं में बढ़ते तनाव को कम करने के लिए महाविद्यालय में टेबिल, बैडमिंटन आदि खेल आयोजित किये जाते हैं। हॉकी, टेबिल टेनिस, फुटबॉल, हैंडबॉल, बास्केटबॉल, नेटबॉल, एथलेटिक्स, जूडो, स्नो-स्नो, ग्रेप्लिंग, बॉक्सिंग, पॉवर लिफ्टिंग, पिस्टल शूटिंग एवं राइफल शूटिंग आदि खेलों में विश्वविद्यालय स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा नियमित रूप से प्रतिभाग किया जाता है। शारीरिक शिक्षा विषय रूप से भी मान्य है।

छात्र कल्याण योजनाएँ : निधन छात्राओं हेतु निर्धन कोष तथा बाह्य संसाधनों से आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

इसके अतिरिक्त निर्धन व मेधावी छात्राओं को उनके अनवरत अध्ययन हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। शासन की ओर से भी आर्थिक रूप से पिछड़े सामान्य एवं आरक्षित वर्ग को विभिन्न छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं। छात्राओं की अभिप्रेरणा हेतु उनकी विशिष्ट उपलब्धियों (अकादमिक / पाठ्येतर गतिविधियाँ) हेतु प्रबन्धतन्त्र उन्हें पुरस्कृत करता है।

महाविद्यालयीय प्रकाशन : महाविद्यालय की पत्रिका 'ज्ञानाञ्जलि' तथा बौद्ध एवं गाँधी अध्ययन केन्द्र के तत्वाधान में प्रकाशित पुस्तकें 'बौद्ध विमर्श' व 'गाँधी दर्शन के विविध आयाम' - छात्राओं - शिक्षिकाओं तथा बाह्य विषय विशेषज्ञों के शोधपरक अनुशीलन भावाभिव्यक्ति व सृजनात्मक प्रतिभा के प्रदर्शन के सुदृढ़ आधार है। सत्र २०२१-२०२२ से महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "ज्ञानाञ्जलि" की तथा महाविद्यालय की वेबसाइट पर हैं।

बौद्ध एवं गाँधी अध्ययन केन्द्र : युवा पीढ़ी को संस्कारित करने और उन्हें नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक सरोकारों से जोड़ने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा ११वीं योजना में 'युग प्रवर्तक भारतीय सामाजिक विचारक' योजनान्तर्गत विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में भारतीय महापुरुषों के विचारों के अध्ययन-अध्यापन हेतु अनुदानित किया गया। इसी कड़ी में महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के अन्तर्गत २००८-०९ में बौद्ध अध्ययन केन्द्र व राजनीति विज्ञान विभाग में २००९-१० में गाँधी अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गयी। ये केन्द्र अपनी स्थापना से ही अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में निरन्तर संलग्न रहे और बुद्ध व गाँधी के विचारों को छात्राओं के साथ-साथ समाज के विभिन्न वर्गों तक प्रेषित करने हेतु इन केन्द्रों द्वारा संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, अतिथि व्याख्यानों के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं तथा निबन्ध, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद आदि का आयोजन होता रहता है। केन्द्रों के तत्वावधान में तीन शोध-परियोजनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त युवा सर्वोदय शिविर, विपश्यना, प्रेरक-प्रसंग वाचन, समन्वय, शोध पत्र वाचन इत्यादि अन्य अनेक कार्यक्रमों का भी समय समय पर आयोजन किया जाता है।



प्रगति पथ पर आरूढ़ छात्राओं के पद-चिन्ह

विद्यार्थी राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं। अतः उनके सर्वांगीण विकास हेतु संकाय विस्तार, परीक्षाफल, पाठ्येतर क्रियाकलाप महाविद्यालय की बहुआयामी प्रगति आदि सभी क्षेत्रों में महाविद्यालय लक्ष्य प्राप्ति हेतु सतत् संलग्न है। प्रबन्ध समिति के सम्माननीय सचिव श्री मनोज गोयल जी, अन्य गणमान्य पदाधिकारी एवं सदस्यगण, की जागरूक, कर्मशील प्रचार्या प्रो. अनुपमा मेहरोत्रा जी, प्राध्यापिकाएँ एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों के सम्मिलित प्रयासों से महाविद्यालय ने अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। प्रमुख उपलब्धियों का विवरण निम्नवत् है -

परीक्षाफल :

महाविद्यालय का परीक्षाफल निरन्तर गुणात्मकता की ओर अग्रसर है। प्रतिवर्ष महाविद्यालय का परीक्षाफल ९७ प्रतिशत रहता है। परिणामतः महाविद्यालय व विश्वविद्यालय पटल पर छात्राएँ अपना नाम अंकित करती आ रही हैं।

महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय की परीक्षा 2024-25 में महाविद्यालय स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं का विवरण :-

मुख्य परीक्षा - 2025

अकादमिक पुरस्कारों का विवरण
स्नातक स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त

कक्षा	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्राप्तांक / पूर्णांक
बी.कॉम आनर्स	अशी बग्गा	श्री हरमिक सिंह	996/1400
बी.लिब	श्वेता पाठक	संजीव कुमार	651/900
बी.एस.सी. (गृह. विज्ञान)	तैय्यबा अंसारी	मो. फहीम	2074/2800
बी.ए.			

परास्नातक स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त

विषय	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्राप्तांक / पूर्णांक
संगीत (गायन)	सृष्टि	श्री अनित कुमार	1876/2200
संगीत (तबला)	अंजना सक्सेना	श्री प्रेम प्रकाश सक्सेना	1891/2200
अर्थशास्त्र	दीक्षा माहेश्वरी	श्री रामसेवक माहेश्वरी	1675/2200
राजनीतिशास्त्र	सबा हुसैन	शाकिर हुसैन	1659/2200
इतिहास	फरहीन अंसारी	मो. युसुफ	1702/2200
अंग्रेजी	अतीका	परवेज आलम कुरैशी	1712/2200
वाणिज्य	दिया चौरसिया	श्री अशोक कुमार चौरसिया	1635/2200
फैशन डिजाइनिंग	सुचेता गंगवार	ब्रजेश कुमार	1910/2200
चित्रकला	अंशिका यादव	संजीव यादव	1699/2200
एम.लिब	प्रेरणा शर्मा	सत्य प्रकाश शर्मा	868/1000
समाजशास्त्र	अरीशा	मो. सुल्तान	1491/2200
शिक्षाशास्त्र	कोमल कुमारी	श्री राम प्रकाश	1692/2200
हिन्दी	सृष्टि दीक्षित	राजेश दीक्षित	1745/2200

विश्वविद्यालय स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त

१. संगीत गायन	सृष्टि	श्री अनिल कुमार	गोल्ड मेडलिस्ट
२. फैशन डिजाइनिंग	सुचेता गंगवार	ब्रजेश कुमार	गोल्ड मेडलिस्ट

राष्ट्रभक्त कवयित्री
सुभद्रा कुमारी चौहान



हिन्दी प्रकल्प

विश्व भाषा की ओर हिन्दी के बढ़ते कदम

- सोनल मिश्रा 'एम.ए. हिन्दी - प्रथम सेमेस्टर'

“जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत की आशा है हिन्दी।
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है, वो मजबूत धागा है हिन्दी।
हिन्दुस्तान की गौरव-गाथा है हिन्दी, एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी।
जिसने काल को जीत लिया, ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी।”

सरल शब्दों में कहा जाए तो, जीवन की परिभाषा है हिन्दी।

सृष्टि के निर्माण काल से ही भाषा का संबंध मानव समाज से रहा है। मानव जीवन में भाषा एक अभिन्न अंग है। जिसके बिना मानव गूंगा है। इस विश्व में कई महाद्वीप, राष्ट्र, प्रांत हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का कथन “चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी। बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर धानी” आज भी चरितार्थ हो रहा है।

विश्वभाषाएं तो विश्व की उस प्रत्येक भाषा को कहा जा सकता है, जिसमें प्रयोक्ता एकाधिक देशों में बसे हुये हैं। किन्तु विश्व भाषा पद की वास्तविक अधिकारिणी वे भाषाएँ हैं, जो विश्व के अधिकतर देशों में पढ़ी, लिखी, बोली, सुनी और समझी जाती हैं। विश्व भाषा से अपेक्षाएँ होती हैं कि उसे बोलने-समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार हो। आज भारत के बाहर नेपाल, भूटान, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैण्ड, हांगकांग, फिजी, मॉरीशस, ट्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम, इंग्लैण्ड, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दी भाषा प्रचुर संख्या में है। हिन्दी में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पहाड़ी, बुंदेली, बघेली, मागधी, छत्तीसगढ़ी और जाने कितनी उपभाषाओं के शब्द भण्डार मुहावरे और उसकी लोकोक्तियाँ रच-बस गयीं हैं। इसके अलावा हिन्दी भाषा का भारत की अन्य भाषाओं के साथ शताब्दियों से घनिष्ठ संपर्क रहा है। विश्व भाषा से तीसरी अपेक्षा है कि भाषा में विश्व मन का भाव हो। हिन्दी भाषी अपने देश में भी अनेक राज्यों में निवास करने के कारण प्रांतीयता से ऊपर उठा हुआ है और उसके पास ऐसे साहित्य की विशाल परम्परा है, जो विश्व के पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

हिन्दी वस्तुतः फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है हिन्द का या हिन्द से संबधित। हिन्दी शब्द की निष्पत्ति सिन्धु-सिन्ध से हुई है। क्योंकि ईरानी भाषा से ‘स’ को ‘ह’ बोला जाता है। इस प्रकार हिन्द शब्द संपूर्ण में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है। कालांतर में हिन्द शब्द संपूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा। इसी हिन्द से हिन्दी शब्द बना है। आज हम जिस भाषा को हिन्दी के रूप में जानते हैं वह आधुनिक आर्यभाषाओं में से एक है। स्वतन्त्रता मिलने पर संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि “हिन्दी भारत की राजभाषा होगी और लिपि देवनागरी होगी। साथ ही सोलह प्रादेशिक भाषाओं को भी मान्यता दी गयी। संविधान के भाग १७ के अध्याय १ की धारा ३४३ (i) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी देवनागरी लिपि होगी।

“हिन्दी मेरी भाषा है, हिन्दी मेरी आशा है।”

हिन्दी का उत्थान करना, यही मेरी जिज्ञासा है।

हिन्दी की बोली अनमोल, एक शब्द के कई विलोम।

हिन्दी हिन्द हिमालय पर ऊँचे आसन वाली है।

हिन्दी जयहिन्द और वन्देमातरम् के उच्चारण वाली है।

हिन्दी की प्रगति का अवलोकनार्थ एक उच्च स्तरीय हिन्दी समिति है। पर वर्षों तक इसकी मीटिंग ही नहीं बुलाई जाती। मंत्रालय की अपनी-अपनी सलाहकार समितियाँ हैं जो सलाह तो स्वीकृत देती हैं पर वह मात्र कागजी ही रह जाती हैं। हिन्दी अपना वह अस्तित्व जिसकी वह अधिकारिणी है अभी तक नहीं पा सकी है। भले ही राजनीतिक दृष्टि से भारतखण्ड की एकता आधुनिक युग की देन मानी जाती हो, पर यहाँ सांस्कृतिक एकता बनी रहती है और एक भाषा का विस्तार भी भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। १९वीं शताब्दी में हिन्दी का प्रचार बड़े जोरो से हुआ। ईसाई मिशनरियों ने यह अनुभव किया कि आम

आदमी तक पहुँचना तभी सम्भव है जब हिन्दी को अपनाया जाये और उन्होंने अनेक धार्मिक ग्रन्थों के अनुवाद भी कराये। १८वीं शताब्दी में पेशवा, सिन्धिया तथा होलकर घटारे हिन्दी में ही अपना राज-काज करते थे। मुगल शासन में हिन्दी ही राष्ट्र भाषा थी। सिक्को पर सारी सूचना हिन्दी में ही रहती थी। शाही फरमानों में भी हिन्दी का प्रयोग होता था।

कलकत्ता का फोर्ट विलियम कॉलेज जो कम्पनी सरकार द्वारा खोला गया था जिसमें हिन्दी सिखाने का प्रयोग किया गया था। उसका भी प्रयोजन यही था कि आधुनिक भाषाओं में हिन्दुस्तानी ही एक ऐसी भाषा है। जिसे बिना सार्वदेशिक कार्य नहीं चल सकता। विदेशियों का मत भी यही था कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है। उसका विकास इसी रूप में होना चाहिये। राष्ट्रभाषा हेतु भारत में जो भी आन्दोलन हुए उसमें हिन्दी की अनिवार्यता पर सदा जोर दिया गया। राजा राम मोहन राय ने स्पष्ट कहा कि इस समय देश की एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है। वे स्वयं हिन्दी में ही काम करते थे। हिन्दी को प्रतिष्ठित पद प्रदान कराने में आचार्य समाज का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐनी बेसेन्ट का मत था कि हिन्दी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारत वर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने वाले मिल सकते हैं। भारत के सभी स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिये। अंग्रेजों के विरोध के साथ अंग्रेजी भाषा का विरोध भी गहराता गया और राष्ट्रव्यापी आन्दोलन के माध्यम से हिन्दी ही सारे देश की भाषा बन गयी। एन.सी. केलकर ने लिखा था “मेरी समझ में हिन्दी भारत वर्ष की सामान्य भाषा होनी चाहिए।” यानी यह समस्त हिन्दुस्तान में बोली जाने वाली भाषा होनी चाहिये। आयरिश कवि टॉमस डेविड का मत है - कोई राष्ट्र अपनी मातृ भाषा छोड़कर राष्ट्र नहीं चला सकता। दक्षिण में भी हिन्दी की मान्यता है। दक्षिण के तीर्थों में हिन्दी का ही प्रचलन है। हिन्दी ही एक मात्र भाषा है। जो सारे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बोली और लिखी जाती है। हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा, राजभाषा तथा सम्पर्क भाषा है। यह भारत में २८ करोड़ लोगों की सम्पर्क भाषा है। हिन्दी पूर्णतया वैज्ञानिक भाषा है। इसके उच्चारण और लेखन में एकरूपता है। राजभाषा हिन्दी को अपने वर्तमान स्वरूप तक आने के लिए निम्नलिखित कालखण्डों से गुजरना पड़ा है। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान इस भाषा ने राष्ट्र को संगठित कर एकता के सूत्र में बाँधने का जो महान ऐतिहासिक कार्य किया है। वह स्वर्णक्षरों में अंकित है। राजभाषा हिन्दी एकता, भावना और प्रेम की भाषा है। भारत में हिन्दी समस्त जन-मानस की संवेदनाओं को प्रकट करने का सरल माध्यम है। आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का वटवृक्ष निरन्तर बढ़ रहा है।

“देश वही होता है जिसकी कोई होती अपनी भाषा वह जिसमें सब व्यक्त करे अभिलाषा,

यह अमीर खुसरो की बोली, है कबीर की वाणी, मीरा की है पीर इसी में और नेह रसखानी”

हिन्दी संवय में अपने भीतर एक अन्तर्राष्ट्रीय जगत छिपाए हुए हैं। आर्य, द्रविड, आदिवासी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेन्च, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, चीनी, जापानी सारे संसार की भाषाओं के शब्द इसकी अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री एवं वसुधैव कुटुम्बकम वाली प्रवृत्ति को उजागर करते हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से अनुवाद की स्थिति बेहतर होती जा रही है। लघु पत्रिकाओं में भौगोलिक और अनुवाद के प्रकाशन का स्वागत और स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है। देश-विदेश में प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी को विश्वभाषा बनाया है। इसके द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रसार विदेशों में हुआ है। विश्व के टी.बी. चैनलों से हिन्दी कार्यक्रमों के प्रसारण ने भी हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी की व्यापकता के कारण दुनिया के १७५ देशों में हिन्दी के शिक्षण व प्रशिक्षण के अनेक माध्यम व केन्द्र बन गये हैं। हिन्दी का शिक्षण व प्रशिक्षण विश्व के लगभग १८० विश्वविद्यालयों शैक्षणिक संस्थाओं में चल रहा है। सिर्फ अमेरिका में १०० से अधिक विश्वविद्यालयों, कॉलेजों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। इससे हिन्दी का वर्चस्व दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। राष्ट्र-निर्माण में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा और राष्ट्र दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

क्या गीता, क्या वेद सभी इसको याद जुबानी,
भारत की भारती यही है, यही है दयानंद की वाणी।
इस धरती पर जहाँ कहीं भी, कोई हिन्दुस्तानी
वहाँ-वहाँ तक हिन्दी गंगा करती सफल खानी।

सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय पहचान का सांस्कृतिक आधार है। भारतीय पहचान का सांस्कृतिक आधार है। भारतीय फिल्मों, संगीत, योग, अध्यात्म, लोक कला और त्यौहारों के प्रसार में हिन्दी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। डिजिटल युग ने हिन्दी की शक्ति को और अधिक बढ़ाया है। इंटरनेट पर हिन्दी सामग्री की वृद्धि विस्फोटक रूप से हुई है। सोशल मिडिया प्लेटफार्मों पर हिन्द दर्शकों की संख्या अंग्रेजी से भी अधिक है। गूगल इण्डिया की रिपोर्ट के अनुसार भारत में भविष्य का इंटरनेट “हिन्दी प्रमुख” होने जा रहा है। डिजिटल पत्रकारिता, ब्लॉगिंग, ई-पुस्तकें ओ.टी.टी. प्लेटफार्म और भाषा आधारित ऐप्स ने हिन्दी के उपयोग को व्यापक बनाया है। यद्यपि विश्व मंच पर हिन्दी का महत्व बढ़ रहा है। फिर भी चुनौतियां कम नहीं हैं। हिन्दी के मानकीकरण की आवश्यकता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध और अनुवाद संसाधनों की कमी, बहुभाषी वैश्विक प्रतिस्पर्धा, अंग्रेजी की प्रबलता, डिजिटल भाषा प्रौद्योगिकी में सीमाएँ और विदेशी संस्थानों में हिन्दी अध्यापन की अपर्याप्तता ये सभी मुद्दे अभी भी प्रमुख हैं। यद्यपि हिन्दी विश्व स्तर पर तेजी से फैल रही है, फिर भी यह पूर्ण रूप से वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित नहीं हो पायी है। विश्वभाषा के रूप में हिन्दी के समक्ष अन्य अनेक समस्याएँ हैं जैसे विदेशों से जिस अनुपात में भारतीय हिन्दू संस्कृति का ह्रास और पश्चिमी भोग वादी सभ्यता का विकास होता चला आ रहा है। कानून के क्षेत्र में हिन्दी स्थिति खराब है। अभी तक उच्च न्यायालयों से हिन्दी का प्रयोग कहीं-कहीं हो रहा है। विश्व व्यापार आयात-निर्यात के क्षेत्रों में दस्तावेजों आदि के लिए प्रयुक्त मानव फार्म आदि मात्र दिखवावा बनकर रह गये हैं। हिन्दी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधकर रख सकती है। कहा भी गया है -

“रंग अनेक, तिरंगा एक है।

प्रांत अनेक, भारत एक है।

समाज अनेक, देश एक है।

उसी प्रकार भाषाएँ अनेक, राज भाषा हिन्दी एक है”

हिन्दी को विश्वभाषा बनाने के लिए निरन्तर सुझाव दिये जा रहे हैं। १० जनवरी को विश्व के लगभग १८० देशों में हिन्दी दिवस मनाया जाता है। वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में जब हम विदेश में हिन्दी की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य विदेश में हिन्दी भाषा के अधिक से अधिक प्रसार के साथ ही विविध क्षेत्रों में हिन्दी के उपयोग से है। इसके प्रसार और उपयोग में कई कठिनाइयाँ हैं, जिनके समाधान की आवश्यकता है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं: वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की भूमिका सार्थक हो तथा उसका प्रयोग बढ़ सके। इसके लिए पहली आवश्यकता हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के मानकीकरण की है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने जो लिपि का मानकीकरण किया उसका उपयोग निदेशालय के अलावा कहीं नहीं होता। यहाँ तक कि सरकारी प्रकाशनों में भी नहीं, निजी प्रकाशकों की बात तो छोड़ ही दीजिये। यही स्थिति हिन्दी भाषा की भी है। हिन्दी देश की संविधान स्वीकृत राजभाषा है किन्तु उसके मानकीकरण की बात प्रशासकीय स्तर पर कोई नहीं सोचता। विदेशी हिन्दी प्रशिक्षकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम हो, जिनमें उनकी समस्याओं पर विचार हो और योजनाबद्ध तरीके से अपेक्षित लक्ष्य के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकें तैयार की जाएँ। विश्व में हिन्दी का प्रसार हो, हिन्दी अध्ययन - अनुसंधान की दिशा में प्रगति है, इसके लिए आवश्यक है कि हिन्दी के संदर्भ ग्रंथ तैयार किये जाये। यह भी निश्चित है कि हिन्दी भाषा और उसे बोलने वालों को जिजीविषा उसे मरने नहीं देगी। अब हिन्दी भले ही संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा नहीं है। परन्तु व्यावहारिक स्तर पर उसकी सभी एजेन्सियों की मान्य भाषा है। संयुक्त राष्ट्र संघ हिन्दी में नियमित रूप से एक साप्ताहिक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। जो इसकी वेबसाइट पर उपलब्ध है। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए सघन प्रयास किये जा रहे हैं। जिन देशों में हिन्दी बोली पढ़ी और लिखी जाती है। उन देशों का एक संगठन बनाने का प्रयास भी भारत सरकार कर रही है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गति देने के लिए विदेश मंत्रालय में “हिन्दी एवं संस्कृत प्रभाग का गठन किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के लिए भारतीय संस्कृति संबंध परिषद् (आई.सी.सी.आर.) महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज हिन्दी १२ से अधिक देशों में बहुसंख्यक समाज की प्रमुख भाषा है। आज सात समुद्र पार तक एक चौथाई दुनिया में उसका परचम लहरा रहा है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका, नेपाल, यमन, मॉरीशस, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर,

युगांडा इन देशों में हिन्दी भाषी - भारतीयों की जनसंख्या दो करोड़ है। फिजी, गुआना, सूरीनाम, टोबोगो, ट्रिनिदाद तथा अरब अमीरात इन ६ देशों में हिन्दी को अल्पसंख्यक भाषा के रूप में संवैधानिक दर्जा प्राप्त है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पश्चिम के समृद्ध देशों में भारतीयों के द्वारा हिन्दी भाषा के वट वृक्ष को सबल बनाया जा रहा है। आज हिन्दी परिवार बहु विराट व विशाल है। नेपाल, श्रीलंका, वर्मा तथा चीन के लिए हिन्दी सदैव सद्भाव की भाषा रही जो लोग अपनी भाषा, संस्कृति और गौरव को नहीं जानते तथा जिन पर पश्चिमी सभ्यता का रंग चढ़ा है, वे भारतीय नहीं भटके हुए मुसाफिर हैं।

हिन्दी सिर्फ एक भाषा नहीं, हमारे राष्ट्र की पहचान है “हिन्दी है हम, हिन्दी का हम सबको अभिमान है।” हिन्दुस्तानी हैं हम, गर्व करो हिन्दी भाषा पर। उसे सम्मान देना और दिलाना है, कर्तव्य है हम पर हिन्दी के प्रति हमें अपने दायित्व पर भी विचार करना होगा। वस्तुतः हिन्दी में हम जितना काम कर पाये हैं क्या कोई भाषा मात्र अपने साहित्य की वृद्धि से ही विश्व भाषा बना सकती है? कदाचित नहीं। वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के विश्वव्यापी प्रसार की बात तो हम कागजी योजनाएँ बनाते हैं। किन्तु उन्हे कार्यान्वित नहीं करते या कर नहीं पाते। आवश्यकता है हिन्दी के वैश्विक विकास के लिए एक ऐसी ठोस भूमि तैयार करना। जिससे हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचानी जाये। इस दिशा में विश्व स्तर पर कार्य हो रहा है और प्रगति भी दिख रही है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा को दर्जा देने के साथ-साथ इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की सांत्वनी आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के लिए कुछ ठोस पहल की जाये। हिन्दी में यह शक्ति कब आएगी कि वह विश्व के लिए एक ऐसी महत्वपूर्ण भाषा बन जाए जिसकी उपेक्षा न हो सके। यह तभी होगा जब हमारी मानसिकता बदलेगी। हमें अपनी भाषा बोलते हुए गौरव का अनुभव होगा। हिन्दी को लेकर कई प्रयासों की आवश्यकता है। हिन्दी के सामने कई चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक है कि हम वास्तविक स्थिति और अपनी कमियाँ समझें। हमें लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान हो। लक्ष्य प्राप्ति की सार्थक योजनाएँ बने, ईमानदारी तथा दृढ़ता से योजनाओं को कार्यान्वित किया जाये तथा समय-समय पर प्रगति का मूल्यांकन किया जाना चाहिये। हिन्दी को विश्व में अपना स्थान बनाये रखने के लिए मिलकर प्रयास करने की जरूरत है।

“भाषा-संस्कृति प्राण देश के,
इनके रहते राष्ट्र रहेगा।
हिन्दी का जयघोष गुंजा कर,
भारत माँ का मान बढ़ेगा।
हिन्दी का अमृत होंठों पर,
वाणी में उसका मंगल,
मन में, लेखन में हिन्दी हो।
प्रेम भाव और समर्पण,
सब चिंतन - मन्थन तेरे हित अर्पण।”

हिन्दी भाषा हमें विविधता में एकता का संदेश देती है। हिन्दी अपने विस्तृत रूप में साकार होकर अंग्रेजी भाषा के स्थान पर द्वितीय भाषा के रूप में अवश्य स्थापित होगी।

“उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारा जाना चाहिये जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिन्दी।”
- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

राष्ट्र के विकास में हिन्दी की भूमिका

- गुनगुन 'एम.ए. हिन्दी - प्रथम सेमेस्टर'

किसी भी राष्ट्र में भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज का हर वर्ग आपस में जुड़ता है, विचारों का आदान-प्रदान करता है और राष्ट्रीय चेतना का निर्माण होता है। भारत की अनेक भाषाओं के मध्य हिन्दी ऐसी भाषा है जो विशाल जन समूह की अभिव्यक्ति का साधन बनकर राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोती है।

हिन्दी केवल संचार की भाषा नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक निरंतरता प्रशासनिक सुगमता, साहित्यिक विस्तार और आधुनिक विकास का सशक्त आधार भी है।

भारत की विविधता विश्व में अद्वितीय है - भाषा, धर्म, संस्कृति, रीति-रिवाज सभी में असंख्य भेद देखने को मिलते हैं। ऐसे में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो अधिकांश क्षेत्रों में समझी और बोली जा सके और देश के विभिन्न समूह के बीच पुल का कार्य करे।

सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी : भारत की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही है। आज तो सम्पर्क भाषा की महती आवश्यकता अनुभव हो रही है। अखिल भारतीय स्तर पर अनेकों कार्यक्रम आयोजित होते हैं, शैक्षिक सेमिनार, पार्टी अधिवेशन, बड़े-बड़े मेले, रथ यात्राएँ, कलाकारों का संगम आदि। इनमें सम्पर्क भाषा की आवश्यकता बराबर रहती है।

आज रेडियो, टी.वी., सिनेमा, पत्र-पत्रिकाएँ भी इसी आधार पर चलती हैं क्योंकि जिस देश में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ होती हैं, वहाँ एक सामान्य भाषा सबको जोड़ने का काम करती है। हिन्दी बनी-बनायी संसर्ग-भाषा है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार "सम्पर्क भाषा वह है जो अन्य लोगों के सम्पर्क के काम आए। हिन्दी धीरे-धीरे भारत की सम्पर्क भाषा बनती जा रही है"

प्रशासनिक प्रणाली में हिन्दी की भूमिका

राज भाषा के रूप में हिन्दी संविधान के अनुसार हिन्दी भारत की राजभाषा है। प्रशासनिक आदेश सरकारी प्रशासन और नीतिगत दस्तावेज धीरे-धीरे हिन्दी में उपलब्ध हो रहे हैं। राजभाषा हिन्दी की लिपि देवनागरी है। यही नहीं, संविधान की अष्टम सूची में भारत की पन्द्रह भाषाओं - असम, बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, संस्कृत, कश्मीरी, उर्दू और हिन्दी को समाविष्ट किया। स्पष्ट है कि हिन्दी संघ के स्तर पर राजभाषा है और प्रान्तों में प्रादेशिक भाषाएँ राजभाषा के पद पर आसीन हैं।

आम नागरिक अपनी समस्याएँ, शिकायतें और सुझाव तथा राजकीय स्तर पर कार्य हिन्दी में सहजता पूर्ण कर रहे हैं। इससे लोकतंत्र अधिक सुदृढ़ होता है।

हिन्दी भारत सरकार की आधिकारिक भाषा है, जिसका उपयोग सरकारी काम-काज, पत्राचार और संसद में होता है। हिन्दी एक सेतु का काम करती है जो देश की भाषाई विविधता को एक सूत्र में पिरोती है।

मीडिया, संचार और हिन्दी : सोशल मीडिया - मीडिया ने हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया के द्वारा दुनिया में हिन्दी का प्रचार-प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ है। सोशल मीडिया, इंटरनेट व मोबाइल के कारण आज युवा पीढ़ी हिन्दी भाषा का सबसे अधिक प्रयोग कर रही है। डिजिटल दुनिया में हिन्दी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना ज्यादा तेज है। सभी ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिन्दी में संदेश भेजना, हिन्दी की सामग्री को पढ़ना सुनना या देखना लगभग उतना ही आसान है जितना अंग्रेजी की सामग्री का।

टेलीविजन व विज्ञापनों के रूप में हिन्दी : मीडिया का सबसे मुरवर प्रभावशाली और आकर्षक माध्यम टेलीविजन माना जाता है। टेलीविजन द्वारा हिन्दी ने राष्ट्र में अत्यधिक प्रगति की व टेलीविजन द्वारा हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार अत्यधिक हुआ है। दूरदर्शन ने राष्ट्रीय कार्यक्रम और समाचारों के प्रसार के जरिये हिन्दी को जनप्रिय बनाने में काफी

योगदान किया। मनोरंजन और समाचार के निजी उपग्रह चैनलों के पदार्पण के उपरांत यह प्रक्रिया हिन्दी भाषा में तेज हो गई।

सामाजिक, पौराणिक और ऐतिहासिक, पारिवारिक तथा धार्मिक विषयों को लेकर बनाए गए हिन्दी धारावाहिक घर-घर में देखे जाने लगे। रामायण, महाभारत, भारत एक रोज जैसे धारावाहिक न केवल हिन्दी में प्रसार के वाहक बने बल्कि राष्ट्रीय एकता के सूत्र बन गए। समूचे देश में टेलीविजन कार्यक्रमों की लोकप्रियता की बढ़ोतरी देश के अहिन्दी भाषी लोग हिन्दी समझने और बोलने लगे।

शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान में हिन्दी का योगदान : हिन्दी न केवल साहित्य की भाषा है बल्कि अब यह विज्ञान, तकनीक, प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा और जनसंचार जैसे क्षेत्रों में भी प्रभावशाली माध्यम बन गई है। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक हिन्दी माध्यम बन गई है। पढ़ाई का जिससे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण संभव हुआ है।

विज्ञान व चिकित्सा जैसे जटिल विषयों को हिन्दी में प्रस्तुत कर आमजन को लाभान्वित किया जा रहा है। डिजिटल युग में हिन्दी का प्रयोग ई-लर्निंग सोशल मीडिया और तकनीकी सेवाओं में भी तेजी से बढ़ रहा है।

यह तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों को आम जनता तक पहुँचाने में मदद करती है, छात्रों को उनकी मातृभाषा में सीखने में सक्षम बनाती है और संचार के माध्यम के रूप में पूरे देश में एकता को बढ़ावा देती है।

आर्थिक विकास में हिन्दी की भूमिका : आर्थिक विकास में हिन्दी की भूमिका बहुआयामी है। हिन्दी भाषी क्षेत्र भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह एक बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचने के लिए व्यवसायों की मदद करती है। जिससे बाजार में वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री बढ़ती है। यह देश की एकता को मजबूत करके और ज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास को गति प्रदान करती है।

हिन्दी में संवाद करने से कंपनियाँ अपने ग्राहकों के साथ गहरे स्तर पर जुड़ सकती हैं जिससे ब्राण्ड निष्ठा और बिक्री में वृद्धि होती है।



डिजिटल इंडिया : एक पहल

- लवी वर्मा - एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर समाजशास्त्र'

डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक बेहद ही महत्वाकांक्षी पहल है। इसका उद्देश्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और समृद्ध अर्थ व्यवस्था में बदलना है, और इसका उद्देश्य यह भी है कि सरकारी सेवाएँ नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध हो। यह कार्यक्रम इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा परिकल्पित किया गया है। इसका प्रभाव संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय साथ ही अन्य मंत्रालयों पर भी पड़ेगा।

यह पहल भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 9 जुलाई 2015 को शुरू किया गया एक अभियान है। जिसका उद्देश्य भारत के प्रत्येक नागरिक को डिजिटल रूप से साक्षर करना तथा भारत सरकार के ई-गवर्नेंस कार्यक्रम को प्रत्येक नागरिकों तक पहुँचाना है। साथ ही देश के प्रत्येक कोने में हाई-स्पीड इंटरनेट के माध्यम से उच्च कनेक्टिविटी प्रदान करना है। यह पहल तकनीक के माध्यम से सरकारी सेवाओं को बेहतर बनाने, उन्हें और अधिक सुलभ और कुशल बनाने में सक्षम है।

डिजिटल इंडिया का विजन : प्रत्येक नागरिक के लिए उपयोग के रूप में अवसरचर्चा सभी ग्राम पंचायतों में हाई-स्पीड इंटरनेट उपलब्ध कराया जाना, जन्म से अंत तक डिजिटल पहचान, मोबाइल और बैंक खाता व्यक्तिगत स्तर पर डिजिटल और वित्तीय क्षेत्र में भागीदारी को सक्षम करेगा। अपने इलाकों में सामान्य सेवा केन्द्र तक आसान पहुँच सार्वजनिक क्लाउड पर साझा करने योग्य निजी स्थान और देश में सुरक्षित साइबर स्पेस।

डिजिटल इंडिया के मुख्य उद्देश्य : ई. गवर्नेंस इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सरकारी सेवाओं को इलेक्ट्रॉनिक रूप प्रदान करके उन्हें अधिक सुलभ, कुशल और पारदर्शी बनाना है।

डिजिटल साक्षरता : नागरिकों, विशेषकर ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता और डिजिटल कौशल विकास को बढ़ावा देना।

नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण : डिजिटल इंडिया का उद्देश्य डिजिटल प्रौद्योगिकियों के माध्यम से नागरिकों को सशक्त बनाना, उन्हें डिजिटल आर्थिकव्यवस्था में भाग लेने और विभिन्न डिजिटल सेवाओं तक आसानी से पहुँच बनाने में सक्षम बनाना है।

सेवाओं का डिजिटलीकरण : डिजिटल इंडिया का प्रमुख उद्देश्य दक्षता, पहुँच और गुणवत्ता में सुधार के लिए स्वास्थ्यच देवभाल, शिक्षा, कृषि और वित्तीय सेवाओं जैसे प्रमुख क्षेत्रों का डिजिटलीकरण करना है।

साइबर सुरक्षा : डिजिटल बुनियादी ढाँचे डेटा और गोपनीयता की सुरक्षा के लिए साइबर सुरक्षा उपायों को मजबूत करना।

रोजगार सृजन : डिजिटल इंडिया का उद्देश्य रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाना विशेष रूप से आइटी और डिजिटल क्षेत्रों में, जिससे आर्थिक वृद्धि और विकास में योगदान मिले।

डिजिटल अवसंरचना : पूरे देश में उच्च गति की इंटरनेट सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत डिजिटल अवसंरचना का निर्माण करना भी इस अभियान का एक मुख्य उद्देश्य है।

डिजिटल इंडिया की मुख्य चुनौतियाँ : डिजिटल साक्षरता का अभाव : भारत की एक बड़ी आबादी, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल रूप से साक्षर नहीं है, जिससे उन्हें प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में कठिनाई होती है।

कनेक्टिविटी और स्पीड : शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी की गुणवत्ता और ब्रॉड बैंड की गति अन्य विकसित देशों की तुलना में धीमी है, जो डिजिटल सेवाओं के पूर्ण उपयोग में बाधा डालती है।

साइबर सुरक्षा जागरूकता : बढ़ते हुए डिजिटल तकनीक और प्रौद्योगिक को अपनाने के साथ ही डेटा हैकिंग हमलों और अनाधिकृत डेटा पहुँच का खतरा भी बढ़ता जा रहा है जिसके लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।

कुशल कार्यबल की कमी : डिजिटल बुनियादी ढाँचे के निर्माण और उसके रख-रखाव के लिए पर्याप्त कुशल और प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ : विशेष रूप से दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली और मजबूत इंटरनेट कनेक्टिविटी सहित डिजिटल बुनियादी ढाँचे का निर्माण एक बड़ी चुनौती है।

डिजिटल इंडिया की मुख्य सफलताएँ : डिजिटल पहुँच और कनेक्टिविटी : डिजिटल इंडिया के कारण इंटरनेट कनेक्शन की संख्या में भारी वृद्धि हुई है, जो भारत के नागरिकों को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ने का अवसर देती है।

ई-गवर्नेंस और सेवा वितरण : नागरिकों को वास्तविक समय में सरकारी सेवाएँ ऑनलाइन और मोबाइल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से उपलब्ध है, जिससे व्यापार करना आसान हुआ है और सेवाएँ सुगम हुई हैं।

डिजिटल भुगतान क्रांति : यू.पी.आई. से डिजिटल भुगतान प्रणालियों के उदय ने वित्तीय समावेशन को बढ़ाया है और भारत को वैश्विक डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में एक अग्रणी देश बनाया है।

प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण : डिजिटल माध्यम से सीधे लाभ हस्तांतरित करने से भ्रष्टाचार कम हुआ है और भारी मात्रा में पैसे की बचत हुई है।

स्वास्थ्य सेवा में सुधार : ई-संजीवनी जैसे- टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

एम.एस.एम.ई. का डिजिटल अपनाना : छोटे और मध्यम उद्योगों के लिए नई डिजिटल तकनीकों को अपनाना और उनके साथ तालमेल बिठाना मुश्किल हो रहा है।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि डिजिटल इंडिया अब केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं बल्कि एक ऐसा जन आंदोलन बन गया है जिसने शासन, वाणिज्य और नागरिकों के जीवन को मूलभूत रूप से बदल दिया है।

डिजिटल इंडिया ने ग्रामीण शहरी विभाजन को पाटकर और ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देकर भारत को एक डिजिटल रूप से सशक्त समाज की ओर अग्रसर किया है, जिससे इंटरनेट की पहुँच और डिजिटल भुगतानों में जबरदस्त वृद्धि हुई है लेकिन अभी भी डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा और सभी तक समान डिजिटल पहुँच सुनिश्चित करने जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ मौजूद हैं।

साइबर सुरक्षा जोखिम : बढ़ते हुए डिजिटल तकनीक और प्रौद्योगिक को अपनाने के साथ ही डेटा हैकिंग हमलों और अनाधिकृत डेटा पहुँच का खतरा भी बढ़ता जा रहा है जिसके लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।

कुशल कार्यबल की कमी : डिजिटल बुनियादी ढाँचे के निर्माण और उसके रख-रखाव के लिए पर्याप्त कुशल और प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ : विशेष रूप से दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली और मजबूत इंटरनेट कनेक्टिविटी सहित डिजिटल बुनियादी ढाँचे का निर्माण एक बड़ी चुनौती है।

डिजिटल इंडिया की मुख्य सफलताएँ : डिजिटल पहुँच और कनेक्टिविटी डिजिटल इंडिया के कारण इंटरनेट कनेक्शन की संख्या में भारी वृद्धि हुई है, जो भारत के नागरिकों को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ने का अवसर देती है।

ई-गवर्नेंस और सेवा वितरण : नागरिकों को वास्तविक समय में सरकारी सेवाएँ ऑनलाइन और मोबाइल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से उपलब्ध है, जिससे व्यापार करना आसान हुआ है और सेवाएँ सुगम हुई हैं।

डिजिटल भुगतान क्रांति : यू.पी.आई. से डिजिटल भुगतान प्रणालियों के उदय ने वित्तीय समावेशन को बढ़ाया है और भारत को वैश्विक डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में एक अग्रणी देश बनाया है।

प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण : डिजिटल माध्यम से सीधे लाभ हस्तांतरित करने से भ्रष्टाचार कम हुआ है और भारी मात्रा में पैसे की बचत हुई है।

स्वास्थ्य सेवा में सुधार : ई-संजीवनी जैसे- टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

एम.एस.एम.ई. का डिजिटल अपनाना : छोटे और मध्यम उद्योगों के लिए नई डिजिटल तकनीकों को अपनाना और उनके साथ तालमेल बिठाना मुश्किल हो रहा है।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि डिजिटल इंडिया अब केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं बल्कि एक ऐसा जन आंदोलन बन गया है जिसने शासन, वाणिज्य और नागरिकों के जीवन को मूलभूत रूप से बदल दिया है।

डिजिटल इंडिया ने ग्रामीण शहरी विभाजन को पाटकर और ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देकर भारत को एक डिजिटल रूप से सशक्त समाज की ओर अग्रसर किया है, जिससे इंटरनेट की पहुँच और डिजिटल भुगतानों में जबरदस्त वृद्धि हुई है लेकिन अभी भी डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा और सभी तक समान डिजिटल पहुँच सुनिश्चित करने जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ मौजूद हैं।

स्वप्न से परे स्त्री

- दीकांक्षा 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

वो स्वतंत्र थी, तो कैद की गई।
 वो सीधी थी, तो सताई गई।
 वो उन्मुक्त थी, तो चरित्रहीन कहलाई।
 वो प्रेम में थी, तो रूलाई गई।
 वो मुरवर थी, तो चुप कराई गई।
 वो प्रतिभा थी, तो चुप कराई गई।
 वो दोषरहित थी, तो दोषी ठहराई गई।
 वो सृष्टिकर्ता थी, तो बांझन भी कहलाई गई।
 वो स्वप्न से परे थी, उसे उसकी सीमा बतलाई गई।
 वो सहज थी, वह असहज महसूस कराई गई।
 वो स्वाभिमानी थी, बारंबार तिरस्कृत कराई गई।
 वो मुस्करा रही थी, देरवो अश्रुपूरित कराई गई।

नारी

-गुनगुन 'एम.ए. प्रथम सेमेस्टर'

नारि शक्ति के सभी रूप हैं महान,
 समाज के सब जन को करना है सम्मान।
 नारी केवल एक शब्द नहीं,
 धरती की गोद में पलती हुई,
 अपार ऊर्जा की धारा है।
 जो टूटे सपनों को भी,
 अपने निर्देशन में नवजीवन देती है।
 उसकी मुस्कान में प्रातः अरुणिम प्रकाश
 आँसुओं में प्रगति के अनगिनत आकाश।
 वह समय के कठिन पथ को भी,
 अपनी मधुरता से मृदुल बना देती है।
 कभी नदी की प्रवाह धारा, शांत भी, चंचल भी, प्रचंड भी,
 कभी पर्वत की दृढ़ता, अडिग, अंचल, अमिट।
 कभी चन्द्रमा की चाँदनी सी सौम्य
 कभी अग्नि सी तेजस्विनी।
 नारी शक्ति के सभी रूप हैं महान,
 समाज के सब जन को करना है उनका सम्मान।

नारी शक्ति

- पूजा 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

नारि शक्ति और जीवन का नाम है।
 प्रातः की किरण है नारी।
 वट शीतल की छाया है नारी।
 शक्ति का अवतार है नारी।
 सरस शब्दों की कविता है नारी।
 नारी शक्ति और जीवन का नाम है नारी।
 सरस्वती का रूप है नारी,
 लक्ष्मी का स्वरूप है नारी।
 बढ़ जाए जब अत्याचार,
 काली, देर्गा के अनुरूप है नारी।
 नारी शक्ति और जीवन का नाम है।
 खुशियों का आधार है नारी,
 जीवन का आधार है नारी।
 शक्ति और चमत्कार है नारी,
 ईश्वर का वरदान है नारी।
 नारी शक्ति और जीवन का नाम है।
 घर-आँगन की मुस्कान है नारी,
 रिश्तों का सम्मान है नारी।
 संस्कारों की जान है नारी।
 स्नेह प्यार और ममता की,
 इकलौती पहचान है नारी।



महिला सशक्तीकरण

प्रियांशी पाल 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

हे नारी तुझे क्या ही कहूँ में,
 तू ही जग की माता है।
 तू ही संसार की रचयिता है।
 तू ही जग जननी है।
 तू ही लक्ष्मी, दुर्गा, महाकाली है।
 तूने ही इस धरती को संसार के रूप में बनाया है।
 तेरे नाम अनेक है तेरे रूप अनेक हैं।
 जिस रिश्ते में बंधती है उसी में ढल जाती है।
 तू कुल को आगे बढ़ाती है हर रिश्ते को खूबसूरती से निभाती है।
 बाबुल का घर आँगन छोड़ पराए घर बस जाती है।
 ईंट पत्थर की बनी इन इमारतों को,
 तूने ही जीवनदाता घर बनाया है।
 तूने ही आदमी को जना है।
 तूने ही सबको इंसान बनाया है।
 यही तेरी शक्ति है यही तेरा प्यार है।
 तू ही जग की माता है।
 तू ही संसार की रचयिता है।
 नारी तू महान है।

महिला सशक्तीकरण

- समीक्षा सिंह 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

भारत देश की शान है नारी,
 धरती माँ की शक्ति का अवतार है नारी।
 में आज की प्रगतिशील नारी हूँ।
 देश को जग-मग करने वाली हूँ।
 पदार्पण करूँ में जिस क्षेत्र में,
 सर्वश्रेष्ठ कर दिखवाऊँगी।
 सरस्वती का रूप है नारी।
 लक्ष्मी का स्वरूप है नारी।
 सतत परिश्रम से पद पाकर,
 संसार में अपना नाम कमाऊँगी।
 मेहनत से मैं इस जग में,
 सम्मान पाकर दिखवाऊँगी।
 सहनशीलता की चुप्पी तोड़कर,
 हर सेवा में आगे जाऊँगी।
 डरकर नहीं जिऊँगी अब,
 निडर होकर दिखवाऊँगी।

महिला सशक्तीकरण

- मुस्कान 'बी.ए. तृतीय सेमेस्टर'

नारी हूँ मैं इस युग की, सर्वश्रेष्ठ कर दिखवाऊँगी।
 पढ़-लिखकर इस संसार में, अपना नाम कमाऊँगी।
 लोगो के अत्याचारों को, मैं स्वयं ही मिटाऊँगी।
 नारी हूँ मैं इस युग की, सर्वश्रेष्ठ कर दिखवाऊँगी।
 नहीं समझना आधी अधूरी, नहीं अधूरी मैं खुद में पूरी।
 चाहे जो भी मैं बन पाऊँगी, गर्व से नारी कहलाऊँगी।
 नारी हूँ मैं इस युग की, सर्वश्रेष्ठ कर दिखवाऊँगी।
 जननी हूँ जीवन भी मैं, जज्बातों पर मेरा जोर नहीं।
 झुका सके मुझे वो शरक्स नहीं, स्वाभिमानी हूँ व आत्मनिर्भर हूँ।
 नारी हूँ मैं इस युग की, सर्वश्रेष्ठ कर दिखवाऊँगी।

मेरी चाहत

- शिल्पी यादव 'बी.ए. पंचम सेमेस्टर'

में अपनी जिन्दगी में, कुछ करना चाहती हूँ।
अपने माता-पिता का सपना सच करना चाहती हूँ।
इन्द्रधनुषों के रंगबिरंगे रंगों में रंगना चाहती हूँ।
छोटे भाई बहिनों की प्रेरणा बनना चाहती हूँ।

माता-पिता दोनों का सहारा बनना चाहती हूँ।
आकाश में चमकता सितारा बनना चाहती हूँ।
आंगन में आजाद पंक्षी की तरह उड़ना चाहती हूँ।
लोगों को खुशी देने का सहारा बनना चाहती हूँ।

जिन्दगी का अनमोल रत्न बनना चाहती हूँ।
पद चिन्ह अपने हमेशा छोड़ जाना चाहती हूँ।
अपनी जिन्दगी में कुछ करना चाहती हूँ।
में एक लड़की नहीं एक सभ्य नागरिक बनना चाहती हूँ।

**प्रकृति प्रेम**

- मानसी 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

आया है मौसम अब गर्मी का, लीची जामुन आम रसीला पीला -पीला।
लेके उनके स्वाद को अब तुम, बीज को इनके फेंक न देना।
कुछ अलग करके अब हम, एक नया इतिहास बनाएं।
करके इनके बीजों को एकत्रित, इनके बीजों को सुस्वायेगे।
डालें जमी में कहीं भी जमेंगे, बीज उभरकर पौधे बनेंगे।
सींचें पौधों को जल से, ये शुद्ध, हवा, फल, छाया देंगे।
लाएगी मेहनत रंग हमारी, जागरूक होगी दुनिया सारी।

गर्व नहीं अभिमान है

- सलोनी 'बी.ए. पंचम सेमेस्टर'

गर्व नहीं अभिमान है,
यही मेरी पहचान है।
में एक लड़की हूँ।
जमाने की बदलती तस्वीर हूँ मैं।
खुदा की लिखी तकदीर हूँ मैं।
मुझे बनाने वाला कोई और है,
पर दुनिया को आगे बढ़ाने वाली,
निडर झांसी की रानी जैसी,
में एक लड़ी हूँ।
ममता की कोई मूर्त हूँ मैं।
ज्ञान बढ़ाने वाली सूरत हूँ मैं।
हौसलों से आसमां को छूने वाली,
अंतरिक्ष में घर बनाने की इच्छा रखने वाली,
सुनीता विलियम्स बछेन्द्री पाल जैसी,
में एक लड़की हूँ।
आसमां में उड़ती कोई पतंग हूँ मैं।
संसार की आधा अंग हूँ मैं।
कृष्ण को पालने वाली माँ यशोदा,
कृष्ण की राधा, राम प्रिय सीता जैसी,
में एक लड़की हूँ।

प्रकृति प्रेम

- बबली 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

नदियों का जल सरगम जैसा
 बहता जीवन हरियाली में।
 पंछी गाएं मधुर तराने,
 शाम ढले सौम्य लाली में।
 फूलों ने मुस्कान बिखेरी,
 पवन बताए किस्से-कहानी।
 धूप सुनहरी ओढ़ के बैठी,
 धरती लगती माँ जैसी प्यारी।
 पेड़ों की झूमती शारदार्यें,
 मानों करती हो अभिवादन।
 प्रकृति है जीवन की कविता,
 जिसमें छिपा सुख नंदन सागर।

नई पीढ़ी का भारत

- अदिति शर्मा 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

नई पीढ़ी का भारत अब जाग उठा है।
 सपनों की रोशनी हर दिशा में फैल गयी है।
 हौसलों की रोशनी हर दिल में उठ रही है,
 नई पीढ़ी का भारत अब जाग उठा है।
 ज्ञान, कला, विज्ञान व साहस इसके साथी हैं,
 त्याग, सेवा, सहानुभूति इसके भाई हैं।
 सम्यता, संस्कार, सहृदयता, दृढ़ता इसके लक्ष्य हैं,
 संघर्षों की आभा ने उनके इरादों को मजबूत बनाया है।
 आज की राह संवारते, कल का भारत बनाते हैं
 यह युवा ही है जो हर अंधेरा मिटाते हैं।
 आओ उठो युवा भारत अपनी शक्ति दिखाओ,
 सपनों को हकीकत में बदलो और नई दुनिया बनाओ।
 उम्मीद की किरण लिए युवा भारत चल पड़ा है,
 सपनों के पंखों से अब अंधेरा टल चुका है।
 डर को पीछे छोड़, हिम्मत को गले लगाया है,
 नई पीढ़ी का भारत बनकर अब आया है।

प्रकृति प्रेम

- ईशिता कुमारी 'बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर'

मन में इच्छाओं को रक्वकर
 कोई मधुर संगीत गुनगुना लो।
 इस प्रकृति की सुन्दरता को
 अपनी आँखों में बसा लो।
 सुहाना सा लगता है आज का मौसम,
 जैसे प्रकृति खुलकर प्रसन्न हो उठी हो।
 शांत मन और खुले दिल से,
 जैसे सब को अपने अन्दर समा रही हो।
 सूरज की पहली किरण जब,
 आंगन में स्वर्ण बिखेरती है।
 मन की सूनी गलियों में,
 आशा के दीप जगा देती है।
 खोल दिये हैं सब द्वार खिड़कियाँ,
 धीरे-धीरे पवन चल रही है।
 महक भर गई फूलों की,
 मुरझाये हुए यौवन में।
 जब भी मन थक जाता है,
 दुनिया की हलचल से छूट जाता है।
 तब पेड़ों की छाँव मुझे,
 माँ की गोद सी लगती है।
 इस झरने की आवाज में,
 मुझे दिल की आवाज सुनाई देती है।
 जो बहते-बहते मानो जैसे,
 मन को हल्का कर देती है।



धूप

- पायल शर्मा 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

सुबह सुबह की धूप है सुहानी।
 बादलों के बीच से गुजर कर,
 भीनी धूप धरा पर आती।
 वृक्षों के चारों दिशाओं से जाती,
 धरा के कण-कण पर प्रकाशित हो जाती।
 सुबह सुबह की धूप है सुहानी।
 जाड़ों के बाद कई दिवसों में आती,
 साथ अपने प्रकृति पर सौन्दर्य विखराती।
 वसंत देख खुशी मनाती,
 साथ ही प्रकृति भी झूमती जाती।
 सुबह सुबह की धूप है सुहानी।
 इसका आंचल स्वर्ण और रेशम सा,
 मेघों के बीच से धूम कर,
 गुनगुनाहट सनसनाहट फैलाती।
 सभी की आँखों को है भाती,
 सुबह सुबह की धूप है सुहानी।

प्रकृति प्रेम

- शशि 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

वसंत का मौसम सुहाना लगता है,
 जैसे सारा संसार झूम उठा हो।
 प्रेम भाव और शान्त मन से,
 सबको अपने हृदय में समा रहा हो।
 चारो तरफ हरियाली ही हरियाली,
 जैसे अपनी ओर रवींच रही हो।
 फूलों की डाली और सूरज की लाली,
 जैसे मन को भटका रही हो।
 कोयल भी गूँज रही है,
 जैसे हृदय में आस जगा रही है।
 सर सर सर हवा चली,
 मौसम ने ली अँगड़ाई।
 सुबह सवेरे सूरज की किरणों से,
 जैसे प्रकृति महक उठी हो।
 बारिश की रिमझिम बूँदें देख,
 सबके मन झूम उठे।



प्रकृति प्रेम

- अंशिका सक्सेना 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

सुहाना सा लगे आज मौसम
जैसे प्रकृति में खिले हुए फूल
जिसे देखकर मनुष्य के चेहरे पर
आनंद और प्रसन्नता होती है।

शांत मन और खुले दिल से
प्रकृति सबको
अपने दिल में समा रही है
प्रकृति बहुत खूबसूरत है।

हर तरफ हरियाली ऐसी
जैसे सर्दी की धूप में,
पेड़ों की हरियाली सोने के,
गहनों की तरह चमकती है।

चिड़िया भी मधुर आवाज में चहक रही है।
मग्न होकर झूम रहे कटहल
जामुन और नींबू के पेड़।
फूल अपनी सुगंध से हवा को महका रहे हैं

प्रकृति की प्रसन्नता तो देखो
जैसे खुद ही में डोल रही
वर्षा की बूंदें हरियाली को
महका रही है।

प्रकृति प्रेम

- आकांक्षा रस्तोगी 'बी.ए. तृतीय सेमेस्टर'

सूरज हसी मुस्कान ले उतरा आँगन,
खेतों को साने सा चमकाया।
हवा में गेहूँ की खुशबू महकी,
पत्तों ने गीत पुराना गाया।

नंगे पैर चली मैं राहों पे
मिट्टी ने पैरों को छू लिया।
जैसे माँ ने प्यार से पुकारा हो,
और दिल ने सुकून सा पा लिया हों।

नदी किनारे बैठी थी वुप
पानी में सूरज झिलमिल था।
लहरों ने हल्का हंस कर कहा,
तू ही तो मेरा मिलन था।

फसलों में खिल रहा था जीवन,
हर दाने में मेहनत की सुगंध।
दिल ने महसूस किया बंधन।
प्रकृति ने कहा मैं हूँ तेरे संग।

न शहर का शोर, न दर्द का झोल,
बस नदी की मुस्कान और
खामोश आसमान।
अब प्रकृति की बाँहों का फरमान
अब तो मैं हो गई इसकी मेहरबान।



नया युग

- अनुष्का गुप्ता 'बी.ए. तृतीय सेमेस्टर'

उद्भव हुआ है एक नए युग का,
जहाँ नवान्मेष ही जीवन का राग।
युवाओं में संकल्पशक्ति प्रस्वर,
भारत बढ़ रहा अभ्युदय के पथ पर।
हर हृदय में दृढ़ निश्चय की प्रीति,
सत्य और प्रेम की अटल प्रीति।
उदात्त विचारों की ऊँची उड़ान,
ले चले देश नई पहचान।
नारी का उज्ज्वल सशक्त योगदान,
बन रहा प्रगति का प्रथम प्रमाण।
संवेदना और अभिरूचि संग,
नवयुवक रच रहे नव जीवन-रंग।
अब समृद्धि की ओर कदम बढ़े।
भारत के सामने नभ तक चढ़े
हर स्वेत में मेहनत का सुर-गीत,
हर दिल में धड़कता माटी का प्रीत।
शिक्षा का दीप जलता रहे,
अंधकार सब मिटता रहे।
विज्ञान का प्रकाश संस्कृति का मान,
इससे बनती भारत की उन्नत पहचान।
ना रूकेंगे और नी ही झुकेंगे,
सत्य के पथ पर दृढ़ता से चलेंगे।
हर युवा के भीतर यही अरमान,
ऊँचा उठे हमारा हिन्दुस्तान।
यह नई पीढ़ी यह नया विचार,
लिखेगी भारत का स्वर्णिम अधिकार।
विश्व पटल पर उभरती यही शान,
यही है नयी पीढ़ी का स्वर्णिम विधान।

विकसित भारत

- वंदिता शर्मा 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

एक लक्ष्य लेकर चले थे हम भारतवासी
जिसका हमें सफल परिणाम मिला।
स्वून बहाया था हम सब ने एक होकर
तब जाकर यह हिन्दुस्तान मिला।
कुछ समय निश्चिंत होकर अचेत पड़ा रहा।
कुछ आशाओं पर था खड़ा रहा।
आक्रामकों ने दिए कष्ट बहुत,
फिर भी यह भारत अडिग रहा।
प्रगति के कदमों पर चलकर जो सपना,
देखा हमने वह पूरा हो जायेगा।
सन् २०४७ तक मेरा भारत,
विकसित हो जायेगा।
सपनों में जो सौँचा हमने,
अब उसे हकीकत बनाना है।
नये भारत की नींव रखकर,
सारा जगत सजाना है।

नई पीढ़ी का भारत

- मुस्कान 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

नई हवा का झोंका है नई उड़ान का देश
युवाओं के सपनों से भरा उम्मीदों का परिवेश।
तकनीक की थाप पर चलता विज्ञान से जगमग भारत
चाँद मंगल तक पहुँच चुका अब नभ से करता बातें हरपल।
धरती से जुड़ा हुआ तन पर नजरें क्षितिज के पार
नई पीढ़ी गढ़ रही है कल का मजबूत आधार।
नई सौँच, नया साहस, नई राहों का निर्माण
अंधेरों को चीर निकालता रोशन भविष्य का अभियान।
मेहनत है जिसका आभूषण और कर्म है जिसका श्रंगार
नई पीढ़ी का भारत है संघर्ष में भी दमदार।
नफरत की हर ज़रीर तोड़ प्रेम का दीप जलाए
एकता की राहों में चलकर विश्व का मन जीत आए।
उम्मीदों की इस फसल में पसीने का है सम्मान
नई पीढ़ी का भारत बनेगा विश्व गुरू अद्भुत महान।

राष्ट्र प्रेम

- ज्योति मौर्य 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

जाग गये हम हिन्दुस्तानी
जियो - जियो हिन्दुस्तानी
हम प्रातःकाल की स्वर्णिम किरण
हम दिन के प्रकाश नवीन।
हम नई पीढ़ी के वीर सैनिक
धीरता, वीरता, गम्भीरता धारण किये अडिग
हम पहेरेदार शिखर हिमालय के
सुख स्वर्ग का अनुभूत करते।
हम त्याग सेवा-शान्ति को देने वाले
पर मातृभूमि पर मर मिटने वाले
शास्यश्यामला धरती माँ के
आँखों के उजियाले दीपक हैं।
गंगा-यमुना, शारदा, कावेरी
नदियों के रक्ववाले हैं।
तन, मन, धन भारत माँ पर समर्पित
जियो - जियो हिन्दुस्तानी।

राष्ट्र प्रेम

- चेतना 'बी.ए. तृतीय सेमेस्टर'

जिस धरती पर हमने जन्म लिया
जिसके कण-कण से है जुड़े
यह देश हमारा प्यारा भारत
इस पर हम कुर्बान हुये।
इसके गौरव की रक्षा हम करें
हर पल इसके लिए जियें
सैनिकों ने दिया अपना जीवन
उनके बलिदानो को न भूले।
सीने में भर लो राष्ट्र के सम्मान को
कर दो न्योछावर इस धरती पर अपने प्राणों को
इसकी लाज हमें है रक्वनी।

राष्ट्र प्रेम

- कामिनी चन्द्रा 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

इस धरती की खुशबू में बसी है मेरी पहचान
इस धरती से जुड़ा है मेरा सपना हर अरमान
तिरंगे के शान में धड़कता है मेरा दिल
सभी रंगो और धर्मों के लोग यहाँ रहते हैं हिल-मिल।
सीमाओं पर खड़े जवानों की आँखों में
मेने वतन की इबादत का सच्चा रूप पाया है
उनकी आँखों में है वो हिम्मत
जिसने आँधियों में भी देश-भक्ति का दीप जलाया है।
खेतों की हरियाली में, पर्वतों के ऊँचे शिखरों में
नदियों की बहती लहरों में गुंजित है भारत का स्वर
राष्ट्र प्रेम कोई शब्द नहीं
यह तो आत्मा की वह लौ है
जिसको कोई बुझा नहीं सकता
क्योंकि ये धरती अपनी माँ है
और माँ से प्रेम अमर होता है।

Where Strength is Born

- Aayushi saxena 'M.A. 1st Semester'

When silence weighs heavier than words,
And hope feels thinner than air,
The soul begins its quiet work,
Learning how much it can bear,
Pain does not knock, it enters slow,
It settles deep, unseen, unheard.
Yet in that dark, confined space,
A stronger truth is silently stirred.
We are not built by moments of ease,
But by nights that refuse to end
By choosing to stand when knees still shake,
By breaking, yet learning to mend.
So walk on, even when unseen,
Even when faith feel thin than torn.
For strength is never loudly made
It is born where we are worn.

Nilanjana Sudeshna "Jhumpa" Lahiri



English Section

From First Bell to Last Goodbye

- Ramsha Siddiqui (*Guest Lecturer Department of English*)

Some places do not enter your life quietly. They arrive early, stay long, and slowly become part of who you are. Long before I understood what memory meant, this campus had already begun writing itself into my story. From the first bell I ever heard to the last goodbye I now prepare to say, this place has held me through every season of becoming.

My journey began at CSA School, where childhood felt safe and endless. Small classrooms, familiar faces, and days that passed without hurry shaped my earliest sense of belonging. As I grew older, SGN School gave me courage, voice and direction. Those years taught me to stand taller, dream wider and believe quietly in myself. I did not know then that all these steps were leading me back to the same ground again and again.

And then came SRS PG College. This was where my heart found its language. Studying English here was not just an academic choice; it was an awakening. The classrooms, the corridors, the English Department floor, and later the staff room become spaces where I learned to think deeply, feel honestly, and express freely. Becoming the Department Topper was an honour, but more than that, it was a moment of recognition - a quiet acknowledgment of how profoundly this place had shaped me. Life gave me a beautiful surprise when I returned as a Guest Lecturer. Standing where I once sat, teaching in the same spaces that once held my own nervous hopes, guiding students who carried the same dreams I once had, felt like completing a sacred, gentle circle. The English Department did not just welcome me back; it held me as it always had, with warmth and quiet strength.

I have lived countless moments on this campus. I have celebrated birthdays here - first as a student surrounded by friends and laughter, later as a teacher surrounded by teachers and students who made me feel cherished in entirely new ways. I have danced on this campus, not just on stage but in spirit. I have sung, performed, walked the ramp, and discovered confidence in places I never expected. I have cried with teachers who stood beside me and laughed with them until the days felt lighter. I have mentored students who reflected my younger self and gifted me a happiness I never knew existed.

This college gave me unforgettable people Kind hearts Gentle guidance Compliments that lingered, memories that softened time and laughter that still echoes in my mind. I feel deeply blessed to have been shaped by such people and such moments. This campus did not merely educate me; it nurtured me, supported me, and believed in me long before I fully believed in myself.

And so, I leave with a heart full of love, unforgettable memories, countless laughter, and quiet compliments that stayed with me long after they were spoken. I leave carrying faces, voices, kindnesses, and moments that words can never fully hold. This chapter ends here, gently, without noise. But the gratitude does not. It stays. It lingers. It lives - in me, always.

If my College Could Talk

- Priya Sing 'M.A. 1st Semeste'

It would tell stories written in footsteps and dreams. Thousands of students have walked through its gates, Carrying hops, fears, and silent prayers in their hearts. Every classroom, Corridor and bench holds a memory waiting to be heard. My college would speak of nervous first days, of unsure smiles and trembling voices. It would remember roll calls, late arrivals and laughter shared during free periods. The classrooms would talk of boring lectures too, But also of lessons that changed how we think and see life. The library would whisper tales of silent struggles, Last-minute exam preparation and sleepy eyes over books. The canteen would happily recall friendships built over tea, shared lunches and endless conversations. The playground would remember both victories and defeats, Teaching us teamwork, patience and strength. If my college could talk, it would speak of growth. it would proudly say how shy students became confident speakers, And how ordinary learners discovered hidden talents. In the end, it would gently say, "I am proud of you." Forever standing as a place of learning, growth, And beautiful memories that never fade.

Journey Is Going On

- Manul Parashari 'M.A. 1st Semester'

I was born in Badaun, but before I could see this world, my father passed away. He never saw me there was a horrible train accident and because of that I never felt a father's love. This pain became a silent part of my life and stayed with me as I grew up. Living in ths society without a father's support made me hard and strong. My mother left me for join in another city to secure my future. My mother Maternal Grandmother raised me and my elder sister. Life with her home was difficult, poverty, illness and responsibilities made out childhood hard and incomplete. Still I chose not to complain. I focused on my studies and worked honestly. With dedication without having satisfied money I Completed my 12th standard with 82% with mathematics, physics and chemistry. I always believed that if I did not receive much love in my childhood, I should earn respect through my actions. Hard work become my strength. I qualified the physical stage at the CRPF center in Lucknow for the BSF HCM post. Now I am preparing for the written exam. Along with this, I am completing my post-graduation on my own. My journey has been painful, but it is not over. It is still going on. Though the road has been long & heavy. I will walk ahead hope, believing a better dawn waiting for me.

My Country*- Zoya Fatima 'B.A. 5th Semester'*

My country rugged mountains,
 Beautiful valleys,
 and vast plains
 Lets you think your own thoughts.
 My country of green forests,
 Long seashores,
 And mighty rivers
 Lets you follow your own God.
 My country of many cultures,
 And many languages.
 My country of colorful costumes,
 Colorful festivals
 And colorful myths,
 Let the Indian spirit bind one and all.

Forward*- Akriti Saxena 'B.A. 5th Semester'*

Built on care and a measured view,
 On insight tested, patient and true
 this offering stands where plans align
 With steady hands thoughtful time
 We weight the risks, the paths we choose,
 The changing tides, the facts we use;
 Yet move with purpose, clear and sound,
 Where long-term value may be found.
 No promise made, nor future sealed,
 But vision formed and aims revealed
 An open course, pursued responsibly,
 Toward growth with due transparency.

The Greatest Wealth*- Humera Mansoori 'M.A. 1st Semester'*

In a world where success is often measured by money and possessions, we rarely pause to ask what true wealth actually means. This thought - provoking story beautifully reminds us that material riches are never greater than inner peace and wisdom.

Once a fakir was walking along a road when he entered a dense forest. There he was a woodcutter working hard, cutting wood every day to earn his livelihood. The fakir asked him, "Do you do this work daily? The woodcutter replied honestly, "Yes this is how survive."

The fakir then said, "If I guide you toward a better path, will you trust me?" The woodcutter agreed. The fakir told him about a forest ahead where sandalwood trees grew, explaining that they could be identified by their fragrance. The woodcutter followed the advice and soon his financial condition improved.

After some time, the fakir returned and encouraged him to move further, guiding him to a silver mine, recognizable by numerous ant hill. Later, he led him to gold mines and eventually to precious stones and diamonds. Each step taken on the fakir's guidance brought greater wealth, respect and power. With time, the woodcutter become so rich that people treated him like a king.

One day, when the fakir reappeared after a long absence, the woodcutter complained about being left alone. The fakir calmly replied, "You still do not understand the greatest truth. The wood cutter proudly said, "I have diamonds and jewels. What could be greater than this?"

The fakir smiled and said, "I gave you sandalwood, silver, gold and diamonds because I had knowledge. Yet I continue to chant God's name. The greatest wealth I possess is wisdom, peace, contentment, and faith in God."

This story teaches us that true richness lies not in what we own, but in what we understand and feel within.

Footnote of Childhood

- Nimra Farhat 'B.A. 5th Semester'

Difference of weight once bag now responsibilities :

The journey from the schoolyard to the college campus is a fundamental redefinition of weight. As children, our burdens were physical; the bag on our shoulders looked bigger than we were, swinging and slipping, yet it carried nothing but a tiffin box and dreams that fit in small pockets. Year later, the college backpack is slim and effortless, yet it weighs more than anything we carried as children. Our bags got smaller, but the burdens grew quieter and heavier.

The Pen & Pencil :

In childhood, we lived in pencil. Mistakes were soft, dusted away with erasers that left the crumbs of our innocence. But adulthood hands us a pen. Now mistakes stain. They stay. Even the "whitener" we use to cover our mistakes with highlight the very error which we intend to hide. Somewhere along the way, we learn that not all mistakes can be erased, some are lessons to learn from.

The Pink Sky and The Blue Reality :

As children, even the sky could be pink. No one questioned it. Imagination needed no permission. But growing up comes with invisible rules. The sky must be blue, dreams must be reasonable, and creativity must make sense. The freedom to build our own world slowly fades. Childhood lets you build your world, but adulthood teaches you that the world might not let you keep it.

The Game of Make - Believe Now A Reality :

The floor used to be lava a harmless game where failure meant laughter and a second chance. Now, the lava is real. One wrong step can an opportunity, a chance, or a dream carefully built over time. There is no reset button anymore. As children, we invented dangers that didn't exist. As adults, we tiptoe around dangers we never meant to imagine.

The Vanishing Hours :

In school, a six-hours day felt a six eras. We stare at the clock, wishing for a "fast-forward" button. In college, those same six hours vanish like breath on glass. They are blur of laughter and sudden realizations. Somewhere between then and now, the wish changed. We no longer want to skip time instead we want to cherish and enjoy each and every moment.

We outgrow the classrooms and the rules, but in this glorious, messy, bittersweet era, we finally understand who we were always meant to be. We were always meant to be ourselves. Someone who still dares to paint their sky pink. Perhaps growing up was never the end of childhood, but learning to carry both the child (innocent, dreamer, full of hope) & the adult (reasonable, realist) with grace.

Festivals and Their Importance In Our Life

- Khushnuma Khan 'M.A. 1st Semester'

Festivals are the heartbeat of our lives. They arrive like gentle pauses in our busy days, bringing light, colour and warmth to our hearts. They turn ordinary moments in to celebrations and remind us to slow down, smile and be grateful.

India is a land where every season bring a festival. Eid teaches sharing and compassion, Diwali lights our homes with hope, Holi colours our lives with joy and forgiveness, Christmas spreads love and peace, Lohri celebrates harvest and togetherness, and Onam reminds us of unity and gratitude. In Indian tradition, even a wedding is a festival - filled with rituals, music, laughter and deep family bonds.

Festivals bring people closer. Differences fade, hearts unite and happiness is shared. Families reunite, neighbour greet each other and strangers feel like friends. Even those far away for work return home - trains carry tired souls and hopeful hearts, bags full of gifts, eyes full of dreams.

For a few precious days, offices are forgotten and home becomes the only destination.

Festivals also support the lives of many. Markets glow with lights, shops fill with colours and shopkeepers find hope and income. From clothes and sweet to decorations and gifts, festivals help small businesses grow and keep traditions alive.

Above all, festivals teach us values - kindness, gratitude, love and unity. They remind us that joy multiplies when shared and traditions become meaningful when celebrated together. Festivals are not just dates on a calendar; they are emotions that live forever in our hearts.

The Role of Parents in a Child's Life

- Alisha Bi 'M.A. 1st Semester'

Parents are the first hands that hold us the first hearts that love us without limits. From the moment we are born, they become our guide, protector, and silent strength. Their love asks for nothing, yet gives us everything. Through their care and sacrifices, they help a child grow with confidence, values and hope.

I have felt this love deeply in my own life. My parents encourage me to learn, dream, and become a good human being. When I make mistakes, they do not raise their voices; instead, they raise my courage. With patience and understanding, they teach me the difference between right and wrong and motivate me to move forward even when the path feel difficult.

From the very beginning, parents quietly plan for their child's future. They save money for education, dreams, and even marriage. Many times, they deny themselves simple comforts and personal wishes so that their child never feel a lack of anything. Their sacrifices remain unspoken, but their love is felt every day.

In moments of fear or sadness, parents becomes a child's shelter. They celebrate successes as their own and carry worries silently in their hearts. Through their actions, they teach honesty, kindness, and hard work. The role of parents goes far beyond providing; they shape a child's mind, heart, and soul. I am who I am because of their endless love. Truly, parents are the roots of a child's life - strong, unseen, and forever holding us upright.

Daughters

- Sana Qureshi 'M.A. 1st Semester'

Daughters enter the home carrying smiles as fresh as flowers.
 These little angels become the pride of their fathers.
 Their laughter fills the house with joy.
 And that very joy fades when daughters become sad.
 As they grow, they become the heartbeat of the home.
 A father's heart trembles when it's time for her marriage.
 You marry her only to burden her with cruelty.
 Yet she endures every torment with a smile.
 Sometimes you burn her for dowry, sometimes for lust.
 Aren't you ashamed? Don't you have daughters at home?
 she carries your legacy, she continues your lineage -
 Have you forgotten that even you were born from a daughter?
 Had there been no daughters, how would you exist?
 Respect them - for without them, this world wouldn't exist.
 You bring her into your home as Lakshmi, the goddess of wealth,
 Yet suffocate her dreams and cause her pain.
 She silently bears your cruelty while you boast.
 Have you forgotten - when pushed to the edge,
 A daughter can transform into Durga herself?
 How long will you bind her in chains?
 One day daughters will amaze the world-remember that.
 When she becomes kalpana, she touches the skies with her dreams.
 When she becomes Indra, she leads a nation.
 When she sings, she becomes Lata.
 And sometimes, she becomes Kiran, protector of the nation.
 How long will you reject her just because she is a daughter?
 A daughter can become a Sophia... or a Vyomika.



Stolen Childhood : The Reality of Child Labour

- Layba Qureshi 'B.A. 3rd Semester'

Childhood is supposed to be gentle. It should begin with sleepy mornings, school bags that feel too heavy, and dreams that feel impossibly big. It is a time when children should worry about homework and games, not about earning money or feeding their families. Sadly, for many children, childhood is not something they live - is something they lose.

"A child's hands are meant to hold pencils, not pain."

Child labour quietly takes away what can never be returned. Across streets, factories, farms, and homes, children work while the world moves on. They wake up before sunrise, work till their bodies ache, and return home with tired eyes that have learned far too much, far too early. These children are not lazy or careless; they are children trying to survive.

Most of the time, poverty stands behind this painful reality. When a family struggles for food, education begins to feel like a distant dream. Parents are forced into choices no one should have to make. In such moments, childhood becomes the price of survival. Illiteracy, Lack of opportunities, and social neglect make the situation even worse.

The reality of child labour is deeply personal. It is not just about work; it is about loss. Loss of school days, of friendship, of laughter. Long working hours slowly weaken young bodies and quiet young minds. Without education, these children grow into adults who never had the chance to imagine a different life.

"Poverty may steal food, but child labour steals the future."

Child labour is not only a legal issue; it is a moral one. Every child deserves safety, care and the freedom to dream without fear. Laws exist, but laws cannot replace compassion. Real change begins when society chooses not to look away.

Education remains the most powerful way to bring a child back to childhood. A classroom offers more than lessons - it offers hope, confidence, and possibility. When a child learns, something inside them begins to heal. Education gives them the courage to believe that their life can be more than survival.

Many organizations and individuals are working hard to end child labour, but their efforts need support. As ordinary people, we have a role too. We must refuse to benefit from child labour, speak up when we see injustice, and encourage education wherever we can. Sometimes, even awareness can be a powerful beginning.

In the end, child labour is a wound on our shared humanity. A society that allows children to suffer cannot call itself developed. Progress means nothing if it is built on tired hands and silent tears. Let us be kind. Let us choose book over burdens, understanding over indifference, and hope over hardship. Because every child deserves not just a future, but a childhood worth remembering.

Knowledge Makes Man Perfect

- Muskan 'M.A. 1st semester'

Knowledge plays a very important role in our life. It makes a person wise, confident, and successful. Knowledge is not only gained from books, but also from our experiences, teachers, elders and daily life. A person without knowledge is like a ship without a direction. Knowledge shows us the right path and helps us to make correct decisions.

For students, knowledge is the real power. It helps them understand their subject clearly and improves their thinking ability. When a student gain knowledge, he becomes more confident in exams and in life. Knowledge also teaches us the difference between right and wrong. It develops good habits, discipline, and moral values in a person.

Knowledge makes a man perfect by improving his personality. A knowledgeable person speaks politely, behaves well, and respects others. He is not easily fooled because he can think logically. Knowledge removes fear and ignorance and fills our mind with positive thoughts. It helps us solve problems and face challenges bravely.

In today's world, knowledge is the key to success. Every profession need knowledge, whether it is teaching, business, medicine, or engineering. Knowledge helps a person grow mentally and socially. It makes him useful to society and the nation.

In conclusion, knowledge truly makes a man perfect. It shapes our character, sharpens our mind, and leads us towards a better future. Therefore, every student should try to gain knowledge and use it wisely in life.



आदिकवि
महर्षि वाल्मीकि



संस्कृत प्रकल्प

विश्व - शान्तिः

- श्रद्धा मिश्रा 'बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर'

सर्वेऽपि जनः सुखं कामयते तनु शान्तिं विना न लभ्यते, अतः प्रथमं शान्तिं स्यात् ततो सुखं लब्धुं शक्यते। शान्त्यै मनुष्येषु सौजन्यमौदार्यं, स्नेहः, दयोत्साहः, कारुण्यं, शौर्यं सद् भावना सहयोगभावना च स्यात्। तदैव देशे समाजे च शान्तिः स्थापयितुं शक्यते।

'शान्ति' इति शब्दस्य अर्थः चित्तस्य स्थिरता परस्परं सद् भावः च अस्ति। शान्तिः बिना मानवजीवनस्य विकासः असम्भवः अस्ति। 'विश्व-शान्ति' इत्यस्य अभिप्रायः न केवलं युद्धानां अभावः अपितु समस्तमानवताया मध्ये भ्रातृत्वस्य, न्यायस्य मानसिक शान्तेः च उपस्थितिः अस्ति। अद्यतन २०२५ तमे वर्षे, यदा वयं प्रगत तकनीकी युगे जीवामः तदा शान्तेः महत्वं पूर्वस्मात् अति अधिकं जातम् अस्ति। अद्यतन युगे 'विश्वशान्तिः न केवलं कस्यचित् एकस्य देशस्य समस्या, अपितु सम्पूर्णस्य जगतस्य महती आवश्यकता वर्तते।

शान्तिः तदा व प्राप्तुं शक्यते यदा कक्षे सर्वे मैत्रीसहकार्यस्य नियमानाम् अनुसरणं कुर्वन्ति महात्मागान्धी इत्यस्य शान्तिविषये एतत् उद्धरणं विचार्यताम् 'यदि भवान् जगति वास्तविकं शान्तिं इच्छति तर्हि बालकैः आरभ्यताम् इति।' सः अन्यैः सहस्रैः स्वातन्त्र्यसेनानैः सह दशकैः यावत् यथार्थशान्तिं प्राप्तुं संघर्षं कृतवान्। यद्यपि अधुना औपनिवेशिकयुगे न जीवामः तथापि वयं यथार्थशान्तिं प्राप्तुं संघर्षम् कुर्मः दारिद्र्यं क्षुधा भ्रष्टाचार अपराधं रहितः समाजः एकं यत्र सर्वे सुरक्षितं अनुभवितुं शक्नुवन्ति।

शान्तिः सुखस्य सफलस्य च जीवनस्य आधारः भवति। यदा जनाः शान्तिपूर्वकं जीवन्ति तदा ते दारिद्र्यम् शिक्षा, स्वास्थ्यसेवा इत्यादीनां समस्यानां समाधानं कर्तुम् ध्यानं दातुं शक्नुवन्ति।

शान्तिः किमर्थम् महत्त्वपूर्णा?

शान्तिः बहुपक्षीयः अवधारणा अस्ति तस्या महत्त्वव्यक्तिगतस्तराम् वैश्विकस्तरं यावत् भिन्नं भवति।

शान्ति अस्मान् सुरक्षितं पूर्णम् च जीवनं यापयितुं सर्वाणि आवश्यकानि परिस्थितयः प्रदाति।

समुदायानाम् समाजानां च मध्ये सहकारी सम्बन्धं पोष्यति सहकार्यम् आवागमनं, सहिष्णुता च प्रोत्साहयति।

विश्वशान्तये सर्वेषु देशेषु परस्परं मैत्रीभावः सहकार्यम् च भवेत्। अहिंसा, सत्यं, परोपकारः च इति गुणाः अस्माकं जवने अनुसरणीयाः।

बुद्ध - महावीर - गान्धि - सद्गुरुणां महापुरुषाणां उपदेशाः अद्य अस्मान् मार्गदर्शनं कुर्वन्ति। संयुक्त राष्ट्रसंघ अपि एतदर्थम् सततम् प्रयत्नशीलः अस्ति।

भारत सदैव विश्वशान्तयेः दूतः अस्ति। अस्माकं वेदेषु अपि शान्तिमन्त्रः अस्ति -

“ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।”

“सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्॥”

निष्कर्षतः विश्वशान्तिः केवलं भाषणं न भवति अपितु प्रत्येक मनुष्यस्य शुद्ध हृदयेन भवति। यदि वयं 'परमं धर्मं अहिंसाः' इति मत्वा अन्यान् प्रति प्रेमभावं दर्शयामः तर्हि निश्चयमेव इयं पृथ्वी स्वर्गसदृशी सुखमयी च भविष्यति।

चलभाषयन्त्रम् (मोबाइल) वरदानंवा अभिशापवा

- शिवि 'बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर'

अद्यतने वैज्ञानिकयुगे 'चलभाषयन्त्रम्' मानव जीवनस्य अभिन्न अङ्गम् अभवत्। पुरातनकाले यस्य उपयोगः केवलं वार्तालापाय भवति स्म अद्य एतत् यन्त्रम् एकः अति आवश्यक यन्त्रः अस्ति। बालाः वृद्धाः युवकाः सर्वे चलभाषायाः यन्त्रस्य उपयोगं कुर्वन्ति। चित्राकर्षणं गणनादिकं न जाने कति कार्याणि साध्यन्ति एतत्। अद्य एतेन बिना मानवस्य जीवनम् उहितुम् अति दुष्करं विद्यते।

चलभाषस्य लाभः (वरदानम्) :

(१) **ज्ञानस्य भण्डारः** - अन्तर्जालस्य सहाय्येन चलभाषः शिक्षायाः सशक्तम् साधनम् अस्ति। अधुना छात्राः चलभाषस्य सहाय्येन स्वस्य पाठ्यक्रमान् पठन्ति। ई-पाठशालाः सद्शैः जालपुटेः ज्ञानवर्धनं सुलभं जातम्। छात्राः स्वगृहे स्थित्वा एवं कठिनविषयाणां ज्ञानं प्राप्तुं शक्नुवन्ति।

(२) **डिजिटल सेवा:** - धन प्रेषणम् आपणम् विद्युत-शुक्लादीनां प्रदाने अपि एतत् यन्त्रं बहु साहाय्यं करोति। जनाः प्रत्येकं कार्ये घण्टाभिः समयं परिश्रमं धनं ऊर्जाम् च व्ययन्ति स्म। मोबाइल फोनः अन्तर्जालः च सेकेण्डमात्रस्य विषयः अभवत्।

(३) **रौनगारस्य आसरा:** - मोबाइल फोनस्य व्यापकप्रयोगेन शिक्षा, स्वास्थ्यसेवा, परिवहनम् इत्यादिषु उद्योगेषु अपि सकारात्मकः प्रभावः अभवत्। चलभाषायन्त्रस्य अनुप्रयोगैः सवारी-बुकिंग, अनुसरणं च, लाइव यातायातस्य दर्शनं, सार्वजनिकयानस्य अनुसरणम् च अधिकम् सुलभम् जातम्।

चलभाषस्य हानयः (अभिशाप) :

(१) **समयस्य दुरुपयोगः** - सामाजिक-माध्यमानां व्यसनेन युवानः स्वस्य बहुमूल्यं समयं व्यर्थम् कुर्वन्ति येन तेषां शिक्षायाः हानिः भवति। वयं एतस्य अधीने जाताः इति भाति।

(२) **स्वास्थ्ये दुष्प्रभावः** - रात्रौ विलम्बपर्यन्तं चलभाषस्य प्रयोगेन नेत्रयोः पीडा, अनिद्रा, मानसिक तनाव च उत्पद्यन्ते। निरन्तरं मोबाइले दृश्यपटं पश्यन्तः जनाः डिजिटल-आई-सिन्ड्रोम इति रोगेण ग्रस्ताः भवन्ति।

(३) **साइबर अपराधः** - अज्ञानेन निजसूचनाः प्रेषयित्वा जनाः ऑनलाइन धोखाधड़ी इत्यस्य शिकारः भवन्ति। यथा-यथा अस्य प्रभवाः वर्धते, तथा-तथा साइबर-अपराधाः अपि वर्धन्ते।

(४) **सामाजिक दूरता** - चलभाषस्य अतिप्रयोगेण जनः परिवारेण सह समयं यापयितुं विस्मरन्ति। एतेन सामाजिकसम्बन्धेषु शैथिल्यं आगच्छति।

उपसंहार : चल भाषयन्त्रं यथा एकं वरदानम् अस्ति तथैव तस्य दुरुपयोगः अतीव घातकः अस्ति। यदि वयं अस्य उपयोगं ज्ञानवर्धनाय कुर्मः तर्हि एतत् अस्माकं जीवनं सुखमयं करोति। अतः अस्माभिः विवेकपूर्णतया अस्य यन्त्रस्य प्रयोगः करणीयः। यदि वयम् अस्य सदुपयोगं कुर्मः तर्हि एतत् प्रगतये वरदानम् अस्ति अन्यथा विनाशाय। अतः अस्माभिः स्वरक्षायै अस्य संयमित उपयोगः करणीयः।

सत्यमेव उक्तम् - 'अति सर्वत्र वर्जयेत्'।

अस्माकम् नूतनं भारतम्

- वंशिका 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

अस्माकं भारतदेशः विश्वस्य विशालतमः लोकतन्त्रात्मकः देशः अस्ति। १९४७ तमे वर्षे स्वतन्त्रतायाः प्राप्तेः अनन्तरम् भारतेन सर्वक्षेत्रेषु महती प्रगतिः कृता। अद्यतनम् भारतं न केवलम् प्राचीनपरम्पराणां देशः अपि त आधुनिक विज्ञानस्य तकनीकक्षेत्रस्य च अग्रणी राष्ट्रं वर्तते। 'अद्यतनं भारतं नूतनं भारतम्' अस्ति। एतत् तत भारतं अस्ति यत् स्वकीयं प्राचीन-गौरवमयी संस्कृतिं रक्षन् आधुनिकतां प्रति वेगेन अग्रेसरीत। पञ्चविंशत्युत्तर द्विसहस्र (२०२५) तमं वर्षम् यावत् भारतं विश्वपटले एका शक्ता आर्थिकी रणनीतिकः च शक्तिः इति रूपेण उदभूतम् अस्ति।

तकनीकी आर्थिकी च प्रगतिः - नूतनं भारतं केवलं कृषिनिभं नास्ति, अपितु 'डिजिटल इण्डिया' (अङ्कीय भारत) तथा 'मेक इन इण्डिया' इत्यादि योजनाभिः तकनीकक्षेत्रे अपि अग्रसरं वर्तते। अङ्कीय भुगतानात् आरम्भ अंतरिक्षविज्ञानपर्यन्तं (यथा-चन्द्रयान, गगनयान-अभियानि) भारतस्य उपलब्धयः प्रशंनीयाः सन्ति। २०२५ तमे वर्षे अस्माक देशः विश्वस्य तृतीया वृहत्तमा अर्थव्यवस्था भवितुं प्रययते। भारतम् इदानीं केवलं उपभक्ता नास्ति अपितु उत्पादकः भवितुं सज्जम् अस्ति। 'मेक-इन-इण्डिया' इति माध्यमेन २०२५ पर्यन्तम् स्वदेशी उत्पादने बलं दीयते। स्टार्ट-अप-इण्डिया माध्यमेन भारतविश्वस्य स्टार्टअप राजधानी भवितुं वर्धते।

सामाजिक परिवर्तनम् : नूतने भारते शिक्षा स्वास्थ्यं समानता च इति विषयेषु विशेषः बलः दीयते। 'कन्या रक्षतु, कन्यां पाठयतु' (बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ) तथा 'स्वच्छ भारत अभियान' आन्दोलनैः नागरिकाणां मानसे सकारात्मकं परिवर्तनम् आगतम्। अद्यतन युवा आत्मनिर्भरः अस्ति तथा च स्टार्टअप्स माध्यमेन देशस्य विकासे योगदानं ददाति।

सांस्कृतिक - एकता: - विविधतायां एकता अस्माकं नूतनभारतस्य परिचायकः अस्ति। विविधा धर्माः भाषाः जातयः च सन्ति तथापि यदा राष्ट्रहितस्य विषयः आगच्छति तदा सम्पूर्णः देशः एकसूत्रे बध्यते। सर्वेषां साथः सर्वेषां विकासाः सर्वेषां विश्वासः इति नूतनभारतस्य मूलमन्त्र अस्ति।

उपसंहारः - आधुनिकं भारतं स्वकीयां प्राचीनं संस्कृतिं सुरक्षयन् आधुनिकतायाः पथे धावति। यद्यपि देशस्य पुरतः जनसंख्यां निर्धनता च इत्यादयः समस्या सन्ति तथापि दृढसंकल्पेन भारतं पुनः 'विश्वगुरुः भवितुं सज्जं वर्तते। नवीन-भारतं तत् अस्ति यत्र 'सबका साथ सबका विकास' इति मन्त्रेण प्रत्येक वर्गः सशक्तः भवेत्। २०४७ पर्यन्त 'विकसित-भारतस्य' लक्ष्यं प्राप्तुं नवीन भारतम् अद्य एकां सुदृढा आधारशिला स्थापयति। वयमं अस्माकं राष्ट्रस्य प्रगतौ गौरवं अनुभवामः।

अस्माकम् महाविद्यालयः

- साक्षी 'बी.ए. प्रथम सेमेस्टर'

अस्माकम् महाविद्यालयस्य नाम साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालयः अस्ति। अयम् महाविद्यालय उत्तरप्रदेशस्य बरेली नगरे स्थितोऽस्ति। अस्य भव्यं भवनं दूरतः एव दृश्यते। अत्र सर्वाषाम् कक्षाणां प्रकोष्ठानि पृथक-पृथक निर्मितानि सन्ति। महाविद्यालयस्य त्रिभूमिकात्मक भवनं सर्वेषाम् आकर्षणस्य केन्द्रम् अस्ति। भवनस्य प्रत्येके कक्षे काष्ठ निर्मितानि वैत्रासनानि पंक्तिवद्धानि सन्निहितानि सन्ति।

सर्वप्रथम भवनस्य बहिः एकः विशालः काष्ठनिर्मितानि महाविद्यालयस्य द्वारं अस्ति। अस्मात् एव द्वारात् छात्राः अन्ये च जनाः महाविद्यालयं प्रविशन्ति। तत् पश्चात् कश्चिद् दूरे महाविद्यालयस्य प्राचार्याया कक्षं अस्ति। अस्य उभयतः महाविद्यालयस्य कार्यालयः च अस्ति। माननीया अनुपमा महरोत्रा अस्माकं महाविद्यालयस्य प्राचार्या अस्ति। महाविद्यालयेऽस्मिन् स्नातक-स्नातकोत्तर कक्षाणाम् अध्यापनं सम्पद्यते। अत्र हिन्दी-समाजशास्त्र, संस्कृत, वाणिज्य, शिक्षाशास्त्र, संगीत, अर्थशास्त्र, इतिहास, शिक्षाशास्त्र, आङ्गलभाषादीनाम् अनेकानि विषयानां अध्ययनं सुचारु रूपेण प्रचलति। अस्मिन् महाविद्यालये द्विसहस्र संख्यकाः छात्राः अध्ययनं पठनं च कुर्वन्ति। अत्रत्याः अध्यापिकाः सुयोग्याः कार्यकुशलाः प्रवीणश्च स्वेषु-स्वेषु विषयेषु सन्ति। अयं महाविद्यालय एकः श्रेष्ठः महाविद्यालय अस्ति। अस्य छात्राः राज्यस्तरीयासु प्रतियोगितासु प्रायः सहभागितां कुर्वन्ति अग्रसराश्च भवन्ति।

अस्मिन् महाविद्यालये एकः विशालः पुस्तकालयः वाचनालयश्च अस्ति। पुस्तकालयभवनं महाविद्यालयभवनस्य द्वितीय-तले स्थितः अस्ति। पुस्तकालयेऽस्मिन् छात्राः स्थित्वा अध्ययनं कुर्वन्ति। अत्र सर्वेषाम् विषयानां बहूनि पुस्तकानि सन्ति। अत्र शान्त्याः समुचित व्यवस्था अस्ति। डॉ. रूचि अग्रवाल पुस्तकालयाधिका अस्ति। महाविद्यालये एकः सुन्दरम् उद्यानम् अस्ति। यत्र बहवः हरिताः पुष्पावृक्षाः विराजन्ते। उद्याने अस्मिन् विविधवर्णानि सुगन्धिनि पुष्पाणि प्रतिदिनं नूतनाम् आभां धारयित्वा विकसन्ति सर्वे जनानां मनांसि प्रफुल्ली कुर्वन्ति। अस्य उद्यानस्य रक्षार्थम् एकः मालाकारः नियुक्तः अस्ति।

समये-समये आयोजितासु प्रतियोगितासु छात्राः स्व रचित कविता भाषणं आख्यायिकाञ्च प्रस्तुवन्ति। अनेन तेषां छात्राणां बुद्धे योग्यताः वर्धते वाक् पाठवं च आयाति। अत्र एक व्यायामकक्षः अपि अस्ति। महाविद्यालये पाठनान्तरं क्रीडाक्षेत्रे अपि अनेकः प्रतियोगिताया आयोजनं भवति। अस्मिन् महाविद्यालये एन.सी.सी., एन.एस.एस. च पशिक्षणस्य व्यवस्थापि वर्तते।

अस्य महाविद्यालयस्य प्राचार्या अनुपमा महरोत्रा अतीव सुयोग्य अध्ययवसायी प्रशासनकुशलश्च अस्ति। सा स्वभावेन अतीव विनम्र एवम् मृदुभाषिणी अस्ति। सा विदुषी कलाप्रेमी, कर्मठश्च अस्ति। सा महाविद्यालयस्य विकासाय उन्नत्यर्थम् च सदैव प्रयतते। अनेन प्रकारेण अस्माकं महाविद्यालय वस्तुतः एकः आदर्शः महाविद्यालयः अस्ति।

अतः अस्माभिः सदैव अस्य विद्यायां मन्दिरस्य उन्नत्यर्थं प्रयत्नो विधेयः।

साहू रामस्वरूप धर्मार्थ ट्रस्ट, बरेली

१.	श्री विजय कुमार गुप्ता, एम. डी. डेन्टल केबिल कम्पनी ४६-ए, फ्रेन्ड्स कॉलोनी, ईस्ट ऑफ कैलाश फेस १ नई दिल्ली	उद्योगपति	सभापति
२.	श्री लक्ष्मी निवास रूगंटा ४१, जय शैफाली पार्क, सैटेलाइट रोड, अहमदाबाद ३८००१५	उद्योगपति	उपसभापति
३.	श्री मनोज गोयल १०/४३, सैनिक फार्म, नई दिल्ली	उद्योगपति	मंत्री
४.	श्री मनोज मंगल ७ ग्रीन पार्क, बरेली	सी.ए.	उपमंत्री
५.	श्री संजीव कुमार गोयल १०/४३, सैनिक फार्म, नई दिल्ली	उद्योगपति	सदस्य
६.	कुंवर विजय कुमार गोयल चेयरमैन धमपुर ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज ४, ईस्ट फ्रेन्ड्स कॉलोनी, नई दिल्ली	उद्योगपति	सदस्य
७.	श्री अनिल कुमार गोयल १३, सिविल लाइन्स, बियावानी कोठी, बरेली	उद्योगपति	सदस्य
८.	श्रीमती संगीता मितल एम. १८७, ग्रेटर कैलाश, पार्ट २, नई दिल्ली-११००६२	उद्योगपति	सदस्या
९.	श्रीमती ममता गोयल डब्ल्यू-१०/४३, सैनिक फार्म, नई दिल्ली	उद्योगपति	सदस्या
१०.	श्री आर. एन. मेहरा १२४-ए, फ्रेन्ड्स कॉलोनी, सिविल लाइन्स, बरेली	एडवोकेट	सदस्य
११.	श्रीमती मालिनी गोयल पुत्री स्वर्गीय श्याम मुंशी डब्ल्यू-१०/४३, सैनिक फार्म, नई दिल्ली	उद्योगपति	सदस्या
१२.	श्री अनन्त गोयल डायरेक्टर आर.एस. इन्फ्रा प्रोजेक्ट प्रा. लि. सेक्टर १३६, नोएडा - २०१३०१	उद्योगपति	सदस्य
१३.	श्रीमती सुगन्धा भारतीया पुत्री रेनू वी. औतार १७ बी वर्द्धान रोड, कोलकता - ७०००२७	उद्योगपति	सदस्या
१४.	श्री ध्रुव गोयल डब्ल्यू-१०/४३, सैनिक फार्म, नई दिल्ली	उद्योगपति	सदस्य
१५.	श्रीमती संजम गोयल ग्रिप्स्टर वर्ड २०७, लेदर कॉम्प्लेक्स जालन्धर, पंजाब	उद्योगपति	सदस्य

प्रबन्ध समिति

१.	श्री वी. के. गुप्ता, एम.डी. डेन्टल केबिल कम्पनी ४६-ए, फ्रेन्ड्स कॉलोनी, नई दिल्ली	उद्योगपति	अध्यक्ष
२.	डॉ. शशिबाला राठी ६९६, शील नर्सिंग होम, मठ की चौकी आलमगिरि गंज, बरेली	सेवानिवृत्त प्राचार्या साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली	उपाध्यक्ष
३.	श्री मनोज गोयल डब्ल्यू-१०/४३, सैनिक फार्म, नई दिल्ली	उद्योगपति	सचिव
४.	श्री मनोज मंगल ७ ग्रीन पार्क, बरेली	सी.ए.	सह-सचिव
५.	डॉ. के. सी. पाठक १६० ओल्ड कवि नगर, गाजियाबाद	सेवानिवृत्त संयुक्त सचिव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	सदस्य
६.	प्रो. संतोष अरोरा एम.जे.पी.रू.वि. विद्यालय, बरेली	शिक्षाविद	सदस्या
७.	श्री मोहित मेहरा १२४-ए, फ्रेन्ड्स कॉलोनी, सिविल लाइन्स, बरेली	एडवोकेट	सदस्य
८.	प्रो. आलोक श्रीवास्तव सनसिटी विस्तार, बरेली	प्लान्ट साइन्स एम.जे.पी.रू.वि.वि., बरेली	सदस्य
९.	श्री आनन्द गोयल	उद्योगपति	सदस्य
१०.	श्रीमती संजम गोयल ग्रिप्स टर वार्ड २०७, कॉम्प्लेक्स जालन्धर, पंजाब-१४४००१	उद्योगपति	सदस्या
११.	श्री संजय अग्रवाल	ज्वैलर्स	सदस्य
१२.	प्रो. अनुपमा मेहरोत्रा	प्राचार्या	पदेन सदस्या
१३.	प्रो. कनिका पाण्डेय	शिक्षिका प्रतिनिधि	सदस्या
१४.	श्री आशुतोष सिंह	शिक्षिक प्रतिनिधि	सदस्य
१५.	डॉ. प्रीति वर्मा	शिक्षिका प्रतिनिधि	सदस्या
१६.	श्री मदन मोहन शर्मा	शिक्षणेत्र कर्मचारी प्रतिनिधि	सदस्य

शिक्षिका वर्ग

प्रो. अनुपमा मेहरोत्रा	एम. ए. (गृह विज्ञान) पी. एच. डी., प्राचार्या
संगीत विभाग	
१. प्रो. शशि शुक्ला	एम. ए. (संगीत गायन), पी.एच-डी., प्रोफेसर एवं प्रभारी
२. प्रो. रूचि गुप्ता	एम. ए. (संगीत गायन), एम.फिल., पी. एच-डी., प्रोफेसर
३. प्रो. ज्योति शर्मा	एम. ए. (संगीत गायन), नेट, संगीत प्रवीण, पी.एच-डी., प्रोफेसर
४. डॉ. प्रीति सिंह	एम. म्यूज (संगीत सितार), नेट, जे.आर.एफ., पी.एच-डी., असिस्टेंट प्रोफेसर
५. डॉ. दीपशिखा सिंह	एम. ए. (संगीत तबला), नेट, पी.एच-डी., असिस्टेंट प्रोफेसर
६. डॉ. आकांक्षा रस्तोगी	एम. ए. (संगीत गायन), नेट, पी.एच-डी., असिस्टेंट प्रोफेसर
७. डॉ. अंजू मिश्रा	एम. ए. (संगीत तबला), पी.एच-डी., (प्रवक्ता) स्ववित्तपोषित
शिक्षाशास्त्र विभाग :	
१. प्रो. राधा यादव	एम. एस्-सी., एम. एड. पी. एच-डी. प्रोफेसर एवं प्रभारी
२. डॉ. ज्योति गुप्ता	एम. ए., एम. एड., नेट, जे.आर.एफ., असिस्टेंट प्रोफेसर
३. श्रीमती महिमा यादव	एम. ए., एम. एड., नेट, जे. आर.एफ., एम.फिल., असिस्टेंट प्रोफेसर
४. डॉ. दिव्या यादव	एम. ए., पी.एच-डी., एम.फिल., असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग :	
१. डॉ. प्रतिभा पाण्डेय	एम. ए. (हिन्दी), पी.एच-डी., असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी
२. डॉ. अनीता	एम. ए. (हिन्दी), नेट, जे.आर.एफ., पी.एच-डी., असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग :	
१. श्रीमती शिल्पी शर्मा	अतिथि प्रवक्ता
चित्रकला विभाग :	
१. श्री आशुतोष सिंह	ए.एम.टी., एम.वि.ए., नेट, जे.आर.एफ., असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी
२. डॉ. प्रियंका सिंह	एम. ए. (चित्रकला), नेट, असिस्टेंट प्रोफेसर
अंग्रेजी विभाग :	
१. डॉ. बीना यादव	एम. ए. (अंग्रेजी), पी.एच-डी., असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी
२. श्रीमती श्रेता मौर्या	एम. ए. (अंग्रेजी), नेट, असिस्टेंट प्रोफेसर
३. डॉ. प्रियंका वर्मा	एम. ए. (अंग्रेजी), नेट, जे.आर.एफ., असिस्टेंट प्रोफेसर
४. डॉ. रूचि अग्रवाल	एम. ए. (अंग्रेजी), पी.एच-डी., असिस्टेंट प्रोफेसर
५. श्रीमती अफरोज जहाँ	एम. ए. (अंग्रेजी), नेट, जे.आर.एफ., असिस्टेंट प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग :

१. प्रो. कनकलता सिंह एम. ए. (समाजशास्त्र), नेट, पी.एच-डी., प्रोफेसर एवं प्रभारी
२. श्रीमती सीमा अग्रवाल एम. ए. (समाजशास्त्र), एसोसिएट प्रोफेसर
३. प्रो. कनिका सिंह एम. ए. (समाजशास्त्र), पी.एच-डी., प्रोफेसर
४. डॉ. प्रतिमा सिंह एम. ए. (समाजशास्त्र), नेट, असिस्टेंट प्रोफेसर

अर्थशास्त्र विभाग :

१. प्रो. अनामिका कौशिवा एम. ए. (अर्थशास्त्र), नेट, पी.एच-डी., प्रोफेसर एवं प्रभारी
२. प्रो. पूनम सिंह एम. ए. (अर्थशास्त्र), नेट, पी.एच-डी., प्रोफेसर (अवकाश)
३. श्रीमती अर्चना शर्मा एम. ए. (अर्थशास्त्र), नेट, (प्रवक्ता) स्ववित्तपोषित
४. डॉ. सीना टंडन एम. ए. (अर्थशास्त्र), पी.एच-डी., (प्रवक्ता) स्ववित्तपोषित

राजनीतिशास्त्र विभाग :

१. प्रो. प्रीति पाठक एम. ए. (राजनीतिशास्त्र), नेट, पी.एच-डी., प्रोफेसर एवं प्रभारी
२. श्रीमती श्रद्धा मिश्रा एम. ए. (राजनीतिशास्त्र), नेट, जे.आर.एफ., असिस्टेंट प्रोफेसर

इतिहास विभाग :

१. डॉ. सीमा गौतम एम. ए. (इतिहास), नेट पी.एच-डी., एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी

गृहविज्ञान विभाग :

१. डॉ. अभिलाषा सारस्वत एम.एस.सी. (गृहविज्ञान), नेट, पी.एच-डी. (प्रवक्ता) स्ववित्तपोषित
२. डॉ. गीत चावला एम.एस.सी. (गृहविज्ञान), नेट, पी.एच-डी., (प्रवक्ता) स्ववित्तपोषित

फैशन डिजाइनिंग विभाग :

१. डॉ. अलका जायसवाल एम. ए. (चित्रकला), पी.एच-डी., प्रवक्ता (स्ववित्तपोषित)
२. डॉ. लक्ष्मी गुप्ता एम. ए. (चित्रकला), नेट, पी.एच-डी., प्रवक्ता (स्ववित्तपोषित)
३. डॉ. ज्योति गुप्ता एम. ए. (चित्रकला), पी.एच-डी., प्रवक्ता (स्ववित्तपोषित)

शारीरिक शिक्षा विभाग :

१. डॉ. प्रीति वर्मा एम. ए., एम.पी.एड., नेट, जे.आर.एफ., पी.एच-डी., असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी

वाणिज्य विभाग :

१. डॉ. प्रज्ञा रावत एम.कॉम., पी.एच-डी., प्रवक्ता (स्ववित्तपोषित)
२. डॉ. श्वेता अग्रवाल एम.कॉम., पी.एच-डी., प्रवक्ता (स्ववित्तपोषित)
३. डॉ. प्रगति अग्रवाल एम.कॉम., नेट, पी.एच-डी., प्रवक्ता (स्ववित्तपोषित)

पुस्तकालय विज्ञान विभाग :

१. श्रीमती श्रुति मेहरोत्रा प्रवक्ता (स्ववित्तपोषित)

योग (डिप्लोमा)**प्रशासनिक वर्ग :**

- | | | |
|------------------------|----------------------|--------------|
| १. श्री अतुल सक्सेना | बी.कॉम. | कनिष्ठ सहायक |
| २. श्री मदन मोहन शर्मा | एम. ए. (समाजशास्त्र) | कनिष्ठ सहायक |
| ३. श्री आशीष सक्सेना | एम. ए. (आर्थशास्त्र) | कनिष्ठ सहायक |
| ४. श्रीमती पूजा यादव | एम.एस.सी., बी.एड. | कनिष्ठ सहायक |

पुस्तकालय स्टाफ :

- | | | |
|-----------------------|---|-------------------|
| १. डॉ. रूचि अग्रवाल | एम. ए. (अंग्रेजी) पी.एच.डी., असिस्टेंट प्रोफेसर | पुस्तकालय प्रभारी |
| २. श्रीमती शिवानी पाल | एम.एस.सी., बी.एड., बी.लिब. | पुस्तकालय सहायक |
| ३. श्री मानस सक्सेना | बी.ए.वी., बी.लिब. | पुस्तकालय सहायक |

तबला संगतकार रिक्त

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी :

१. श्री पूरन सिंह
२. श्री संजय कुमार सक्सेना
३. श्रीमती सरला
४. श्री महान
५. श्री ब्रजपाल
६. श्री सिद्धार्थ मिश्रा
७. श्री पारस
८. श्री विष्णु शुक्ला



Music Department



Drawing & Painting Department



Hindi Department



English Department



Sociology Department



Economics Department



Political Science Department



Education Department



History Department



Fashion Designing Department



Home Science Department



Commerce Department



Department of Library & Information science



Yoga Department



Physical Education & Sports Department



N.S.S.



Rovers & Ranger



N.C.C.



S.No.	Date	Name of Participant	Tournament / Competition	Medal / Place	Remarks
1.	18.10.2025	Rehnuma Rakhi Megha	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Tabel Tennis Tournament - 2024-25 organized by Sahu Ramswaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly	Team Winner	Selected for North Zone Inter University Tabel Tennis Tournament 2024-25 Organized by Chitkara University, Punjab
2.	24.10.2024	Sejal Singh	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Netball Tournament - 2024-25 organized by Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly	Selected for All India Inter University Netball Tournament 2024-25 Organized by Suresh Gyan Vihar, Jaipur
3.	24.10.2025	Aayushi Saxena Anshika Singh Jayanti Prajapati Manshi Verma	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Yoga Tournament - 2024-25 organized by Sahu Ramswaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly	Team Winner	Selected for All India Inter University Yoga Tournament 2024-25 Organized by KIIT, Bhubneshwar
4.	7.11.2025	Khushi Gupta	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Weight Lifting Tournament - 2024-25 organized by Gindo Devi Mahila Mahavidyalaya, Budaun	Gold Medal	Selected for North Zone Inter University Weight Lifting Tournament 2024-25 Organized by LPU University, Phagwara
5.	7.11.2025	Khushi Gupta	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Power Lifting Tournament - 2024-25 organized by Gindo Devi Mahila Mahavidyalaya, Budaun	Gold Medal	Selected for North Zone Inter University Power Lifting Tournament 2024-25 Organized by Gulbarga University, Kashmir
6.	13.11.2024	Akanksha Saxena Rishika Saxena Khushi Gupta Neelam Gangwar	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Grappling Tournament - 2024-25 organized by Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly	Gold Medal	Selected for All India Inter University Grappling Tournament 2024-25 Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly
7.	30.11.2024	Rakhi Manshi Verma Neelam Gangwar	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Wrestling Tournament - 2024-25 organized by D.S.M. College Kanth, Moradabad	Gold Medal	Selected for All India Inter University Wrestling Tournament 2024-25 Organized by Guru Kashi University, Punjab
8.	26.11.2024 28.11.2024	Deepu Kashyap 100 meters hurdles Deepu Kashyap 400 meters hurdles	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Athletics Tournament - 2024-25 organized by Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly	Gold Medal

S.No.	Date	Name of Participant	Tournament / Competition	Medal / Place	Remarks
8.	26.11.2024 28.11.2024	Deepu Kashyap 100 meters hurdles BA I Year Deepu Kashyap 400 meters hurdles BA I Year	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Athletics Tournament - 2024-25 organized by Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly	Silver Medal Gold Medal
9.	22.04.2025	Vanshika John BA II Year	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Sepak Takra Tournament - 2024-25 organized by Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly		Selected for All India Inter University Sepak Takra Tournament 2024-25 Organized by Central University Haryana
10.	26.12.2024	Khushi Gupta Neelam Gangwar BA III Year BA I Year	Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University. Inter Collegiate Judo Tournament - 2024-25 organized by Hindu College, Moradabad	Gold Medal Gold Medal	Selected for All India Inter University Judo Tournament 2024-25 Organized by GNDU University Amritsar
11.	09.01.2025 12.01.2025	Khushi Gupta Neelam Gangwar BA III Year BA I Year	North Zone Inter University Judo Tournament - 2024-25 organized by GNDU University, Amritsar	Top 16 Top 16	Selected for All India Inter University Judo Tournament 2024-25 Organized by Gurunanak Dev University Amritsar
12.	19.01.2025 21.01.2025	Khushi Gupta BA II Year	North East Zone Inter University Weight Lifting Tournament - 2024-25 From dated 19.01.2025-21.01.2025 at Lovely Professional University, Phagwara.	Top 16 Top 16	Selected for All India Inter University Weight Lifting Tournament 2024-25 Organized by Central University Dharmshala
13.	18.02.2025 22.02.2025	Akansha Saxena - GI MA I Year Khushi Gupta - GI BA III Year Khushi Gupta - NOGI BA III Year Rishika Saxena - NOGI MA II Year Neelam Gangwar - GI BA I Year	All India Inter University Grappling Tournament 2024-25 organized by Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly	Silver Medal Gold Medal Gold Medal Brownz Medal Gold Medal

विश्वविद्यालयीय स्वर्ण पदक विजेता
सृष्टि - संगीत विभाग



विश्वविद्यालयीय स्वर्ण पदक विजेता
सुचेता गंगवार - फैशन डिजाइनिंग विभाग





आवरण के मुख्य भाग की कलाकृति महिला शिक्षा के माध्यम से समाज के सशक्तीकरण का प्रतीक है। चित्र के केंद्र में एक अमूर्त स्त्री की आकृति ऊपर की ओर उठती हुई दिखाई देती है, साड़ी की सी लहराती रेखाओं से इसकी बनावट का आभास होता है। नीचे का भाग मिट्टी जैसे रंगों में है, जो सामाजिक वास्तविकताओं का संकेत करता है, जबकि ऊपर का भाग स्वर्णिम प्रकाश में बदलता हुआ ज्ञान और जागृति का प्रतीक बन जाता है। उसके हृदय में एक खुली पुस्तक है, जिससे पक्षी निकलते हैं और ऊपर उठते हुए प्रकाश की किरणों में परिवर्तित हो जाते हैं। यह पुस्तक से पक्षी और प्रकाश में बदलने की प्रक्रिया शिक्षा से मिलने वाली स्वतंत्रता और ज्ञान के प्रसार को दर्शाती है। संपूर्ण रचना का ऊर्ध्वगामी प्रवाह प्रगति और सशक्तीकरण का संकेत देता है, तथा पृष्ठभूमि में फैलता हुआ प्रकाश यह बताता है कि जब एक स्त्री शिक्षित होती है, तो उसका प्रभाव पूरे समाज तक पहुँचता है।

- डॉ. रुचि अग्रवाल